दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 273 | ग्वालियर, सोमवार, 24 जुलाई 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

इन राज्यों के विधानसभा चुनाव के रिजल्ट से तय होगी लोकसभा

अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव के पूर्व विपक्षी गठबंधन और सत्ता पक्षा ह्ष्ठ को इस साल के अंत में मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में होने वाले विधानसभा चुनाव की अग्नि परीक्षा से गुजरना होगा.इन राज्यों के विधानसभा चुनाव से मिलने वाले रिजल्ट से अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव की तस्वीर काफी हद तक साफ हो जाएगी. आइये जानते हैं क्या है इन राज्यों का पूरा गणित. किसके पास कितनी लोकसभा की सीटें हैं और कितना परसेंट वोट बैंक है.मध्य प्रदेश में होगी कांटे की टक्करः मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और बीजेपी की सीधी टक्कर होनी तय है. 2018 के विधानसभा चुनाव में वैसे तो कांग्रेस की सरकार बनी थी. कमलनाथ मुख्यमंत्री भी बन गए थे. इसके बावजूद बीच रास्ते में ही कांग्रेस के मजबूत स्तंभ माने जाने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने साथी विधायकों के साथ कांग्रेस का साथ छोड़कर बीजेपी के पाले में चले गए थे. इस कारण कमलनाथ की कांग्रेस सरकार गिर गई थी.इसके बाद ज्योतियादित्य ने शिवराज सिंह चौहान को अपना समर्थन दे दिया था. जिसके चलते शिवराज सिंह चौहान फिर से मुख्यमंत्री बन गए. इसलिए इस बार भी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और बीजेपी में कांटे की टक्कर तय है.लोकसभा में बदल जाती है पूरी तस्वीरः लोकसभा चुनाव में तस्वीर बिल्कुल बदल जाती है. बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए ने एमपी में 2014 के लोकसभा चुनाव में (27 सीट) की तुलना में 2019 में और भी धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए कुल 28 सीटों पर कब्जा किया था. बीजपी को एक सीट का फायदा हुआ था. जबकि कांग्रेस को एक सीट का नुकसान.बीजेपी के वोट बैंक में जबरदस्त उछाल आया. उसने अकेले 58 प्रतिशत वोट हासिल किया. उसे एक फीसद अधिक वोट इस बार हासिल हुए थे, जबकि कांग्रेस को 34.50 परसेंट वोट मिला और उसका एक परसेंट वोट गिरा था.राजस्थान में जाटों और राजपूतों ने बदल दिया गणितः मध्य प्रदेश की ही तरह राजस्थान की भी स्थिति है. वहां भी

विधानसभा चुनाव में तो विपक्षी गठबंधन इंडिया का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस का प्रदर्शन शानदार रहता है, लेकिन लोकसभा चुनाव में सारा गणित बदल जाता है. 2018 के विधानसभा सभा में सत्तासीन कांग्रेस का हो गया था. यहां एनडीए ने जाटों, राजपूतों और हनुमान बेनीवाल के साथ मिलकर क्लीन स्वीप कर दिया था.यहां बीजेपी ने 25 में से 24 सीटें खुद जीतीं थीं, जबकि एक सीट हनुमान बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने जीती थी. यहां भी बीजेपी को 58.47 परसेंट वोट मिले थे, जबकि कांग्रेस को 34.29 परसेंट वोट मिले. हालांकि, कांग्रेस के वोट बैंक में करीब 2 परसेंट से अधिक का इजाफा हुआ था. इसके बावजूद उसे एक भी सीट नहीं मिली. बीजेपी से बागी होकर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाने वाले जाट नेता हनुमान बेनीवाल ने अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए पूरे राजस्थान में 84 लाख से अधिक वोट हासिल किए थे. इस बार भी उनकी निर्णायक भूमिका रहेगी.छत्तीसगढ़ में भी लोकसभा में बदल गया रिजल्टः यहां भी 2018 के विधानसभा चुनाव में तो कांग्रेस की सरकार बनी थी. इसके महज एक साल बाद 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने कांग्रेस को बहुत पीछे धकेल दिया था.प्रदेश की कुल 11 लोकसभा सीटों में से बीजेपी ने अकेले 9 सीटें जीत ली थीं, जबकि कांग्रेस को मात्र एक सीट मिली थी. यहां भी लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने 50.70 परसेंट वोट हासिल किया था, जबकि कांग्रेस को 40 परसेंट वोट हासिल हुए. बीजेपी और कांग्रेस दोनों को 2 फीसद वोट बैंक का फायदा हुआ था, लेकिन सीटों के मामले में बीजेपी ने बाजी मार ली.तेलंगाना विधानसभा चुनाव में बदल सकती है तस्वीरः मोदी सरकार को इस बार तेलंगाना में बहुत उम्मीदें दिखाई दे रहीं है. बीजेपी का 2018 के विधानसभा चुनाव में प्रदर्शन तो कुछ खास नहीं रहा. इसके बाद भी उसने लोकसभा चुनाव 2019 में शानदार प्रदर्शन करते 17 में 4 सीटें जीती थीं.2014 के लोकसभा चुनाव की तुलना में बीजेपी को यहां कुल 10 परसेंट वोट बढ़त मिली थी. इसीलिए बीजेपी दक्षिण में तेलंगाना पर खास ध्यान लगाए हुए है. यहां उसकी मुख्य टक्कर के. चंद्रशेखर राव से होनी है.

यूपी में विपक्ष को पटखनी देने की कर ली बीजेपी ने तैयारी! पार्टी की ये स्पेशल-12 टीम बनाएगी रणनीति

प्रशिक्षण टोली पूरे यूपी में चुनाव के लिहाज से कार्यक्रम चलाएगी. इसी प्रशिक्षण टोली के नेतृत्व में अगले महीने से बीजेपी के जिला पंचायत अध्यक्षों का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू होगा. इस बारे में यूपी बीजेपी ने रविवार को ट्वीट किया कि राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष, प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और प्रदेश महामंत्री धर्मपाल सिंह ने प्रदेश कार्यालय पर प्रशिक्षण टोली की बैठक को संबोधित किया. यूपी के कई बड़े-बड़े नेता हाल ही में बीजेपी और पार्टी के नेतृत्व वाले एनडीए में शामिल हुए हैं. सपा विधायक दारा सिंह चौहान बीजेपी में शामिल हो चुके हैं और सुभासपा अध्यक्ष ओपी राजभर भी अब बीजेपी के साथ हैं. इसके अलावा

आने वाले दिनों में सपा और आएलडी के कई नेता भी पार्टी में शामिल हो सकते हैं. इनमें आरएलडी नेता व पूर्व सांसद राजपाल सैनी, सपा नेता जगदीश सोनकर, सुषमा पटेल, गुलाब सरोज और पूर्व विधायक अंशुल वर्मा के बीजेपी में शामिल होने की अटकलें लगाई जा रही हैं. लोकसभा सीटों के लिहाज से यूपी सबसे बड़ा राज्य है. यहां लोकसभा की 80 सीटें हैं. पिछले दो चुनावों से राज्य में बीजेपी शानदार प्रदर्शन कर रही है. बीजेपी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में 80 में से 62 सीटों पर जीत दर्ज की थी. जबकि 10 सीटें बीएसपी ने और पांच सीटें एसपी ने हासिल की थी. वहीं 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने उत्तर प्रदेश में 71 सीटों पर जीत का परचम लहराया था. ऐसे में एक बार फिर पार्टी का ध्यान यूपी पर है और यहां बीजेपी ने चुनावी तैयारियां तेज कर दी हैं

क्या कांग्रेस ने विपक्षी एकता मंच को हाईजैक कर लिया?

सर्वे में लोगों ने दिए चौंकाने वाले जवाब17-18 जुलाई को बेंगलुरु में 26 विपक्षी पार्टियों ने बैठक की थी. मीटिंग में राहुल गांधी ने ममता बनर्जी ने विपक्षी गठबंधन का नामकरण किया. ऐसी अटकलें हैं कि इस वजह से गठबंधन की अगुवाई करने वाले नीतीश कुमार खुश नहीं है. वह बेंगलुरु में विपक्षी गठबंधन की मीटिंग के बाद हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी शामिल नहीं हुए थे.सूत्रों के मुताबिक, नीतीश ने गठबंधन के अंग्रेजी नाम पर आपत्ति जताई थी, लेकिन कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसे अनसुना कर दिया. ऐसे सियासी माहौल के बीच सी वोटर ने एबीपी न्यूज़ के लिए ऑल इंडिया सर्वे किया है.सर्वे में पूछा गया कि क्या कि लगता है कांग्रेस ने विपक्षी एकता मंच को हाईजैक कर लिया? इस सवाल पर बेहद चौकाने वाले नतीजे सामने आए हैं. सर्वे में शामिल लोगों में 37 प्रतिशत का मानना है कि

केवल महात्मा गांधी और तिरुवल्लुवर के फोटो लगा सकते हैं, आंबेडकर का नहीं, मद्रास हाई कोर्ट का आदेश

कांचीपुरम के प्रधान जिला न्यायाधीश समेत सभी जिला अदालतों को सर्कुलर जारी कर निर्देश दिया कि वे अलंदुर में बार एसोसिएशन को अदालत परिसर के प्रवेश कक्ष से बीआर आंबेडकर के फोटो को हटाने के लिए कहें. दरअसल, कई अधिवक्ता संघों ने आंबेडकर और संबंधित संघ के वरिष्ठ अधिवक्ताओं के फोटो का अनावरण करने की अनुमति मांगी है. 11 अप्रैल को आयोजित एक बैठक में, हाई कोर्ट की फुल बेंच ने ऐसे सभी अनुरोधों को खारिज कर दिया था.

सर्कुलर में क्या कहा गया–इस संबंध में सर्कुलर में पुराने आदेशों का जिक्र करते हुए बताया गया कि ये देखते हुए कि ऐसी घटनाएं हुई हैं जिनमें राष्ट्रीय नेताओं की प्रतिमाओं को नुकसान पहुंचाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न स्थानों पर कानून और व्यवस्था की स्थिति भी पैदा हुई है. कोर्ट ने 2010 में भी अदालत परिसरों में किसी और प्रतिमा के निर्माण की अनुमति नहीं देने का संकल्प लिया था.

पिछले प्रस्तावों का किया जिक्र–सर्कुलर में कहा गया है कि इसी तरह, 27 अप्रैल 2013 को फुल कोर्ट ने कांचीपुरम के प्रधान जिला न्यायाधीश को अलंदुर कोर्ट वकील एसोसिएशन को अंबेडकर के चित्र को हटाने के लिए राजी करने का निर्देश दिया और नवगठित विशेष अदालतों में उनकी तस्वीर लगाने के कुड्डालोर बार के अनुरोध को खारिज कर दिया था.

निर्देश नहीं मानने पर होगी कार्रवाई–इसमें आगे कहा गया कि हाल ही में 11 अप्रैल को फुल कोर्ट ने इसी तरह के अनुरोध पर विचार किया और पहले के सभी प्रस्तावों को दोहराया और सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि गांधी जी और तिरुवल्लुवर की मूर्तियों और चित्रों को छोड़कर, अदालत परिसर के अंदर कहीं भी कोई अन्य चित्र प्रदर्शित नहीं किए जाएंगे. रजिस्ट्रार-जनरल ने निर्देश दिया कि किसी भी तरह के उल्लंघन पर बार काउंसिल ऑफ तमिलनाडु और पुडुचेरी को उचित शिकायत देकर कार्रवाई की जाएगी.

लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी का मास्टर प्लान! बड़ी संख्या में दूसरे दलों के नेता होने वाले हैं पार्टी में शामिल

देश में होने वाले अगले आम चुनाव में ज्यादा वक्त नहीं बचा है. जिसे देखते हुए सभी मुख्य पार्टियां अपनी-अपनी तैयारियों में जुटी हुई हैं. विपक्षी दलों ने जहां महागठबंधन कर लिया है तो बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीएका कुनबा भी बढ़ता जा रहा है. सूत्रों के मुताबिक, बीजेपी का मास्टर प्लान है कि हर महीने दूसरे दलों के नेताओं को पार्टी ज्वाइन कराई जाए. सपा विधायक दारा सिंह चौहान बीजेपी में शामिल हो चुके हैं. सुभासपा अध्यक्ष ओपी राजभर और एलजेपी के चिराग पासवान भी अब बीजेपी के साथ हैं. इसके अलावा 24 जुलाई को सपा और आएलडी के कई नेता पार्टी में शामिल होंगे. सूत्रों का कहना है कि आरएलडी नेता व पूर्व सांसद राजपाल सैनी बीजेपी में शामिल हो सकते हैं. इनके अलावा पूर्व मंत्री साहब सिंह सैनी भी बीजेपी में आ सकते हैं. सपा नेता जगदीश सोनकर, सपा नेता सुषमा पटेल, गुलाब सरोज और पूर्व विधायक अंशुल वर्मा भी बीजेपी में शामिल हो सकते हैं.

बढ़ता जा रहा एनडीए का कुनबा–बीजेपी के नेतृत्व में बीती 18 जुलाई को दिल्ली में एनडीए की मीटिंग हुई थी जिसमें सत्तारूढ़ दल ने शक्ति प्रदर्शन किया था. इस बैठक में 38 पार्टियों ने हिस्सा लिया था. इस बैठक से पहले ओपी राजभर की सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) और चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) एनडीए में शामिल हो गई थी.

5 चुनावी राज्यों के लिए बीजेपी ने मोदी कीर्तन और राखी बांधो का बनाया प्लान

मध्य प्रदेश में वर्तमान में बीजेपी की सरकार है तो वहीं मिजोरम में एनडीए गठबंधन की सरकार है और बीजेपी के सहयोगी मिजो नेशनल फ्रंट के नेता जोरमथांगा राज्य के मुख्यमंत्री हैं. आईएएनएस से बात करते हुए बीजेपी महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष वानाती श्रीनिवासन ने बताया कि इन पांचों राज्यों में महिला वोटरों को पीटीं के साथ जोड़ने के लिए एक मेगा प्लान तैयार किया है. श्रीनिवासन ने बताया कि महिला मोर्चे की तरफ से इन पांचों राज्यों के लिए अलग-अलग 3-3 चुनाव प्रभारी बनाए गए हैं. पार्टी की ये 15 महिला नेता अपने-अपने दायित्व वाले प्रदेशों के महिला मोर्चा के प्रदेश अध्यक्षों से समन्वय बनाएंगे. साथ हीं मोर्चे की महिला नेताओं और कार्यकर्ताओं को लेकर संगठन की योजना के मुताबिक महिला वोटरों को बीजेपी से जोड़ने के लिए अभियान चलाएंगे.उन्होंने आगे बताया कि राष्ट्रीय

महिला मोर्चा इन पांचों राज्यों में महिला मोर्चा संगठन को मजबूत बनाने पर खास ध्यान दे रहा है. इसके साथ ही मोर्चा नए महिला वोटरों को पार्टी से जोड़ने के लिए नया वोटर सम्मेलन जैसे कई कार्यक्रमों का आयोजन बूथ स्तर और शक्ति केंद्रों तक कर फर्स्ट टाइम महिला वोटर और अन्य महिला वोटरों तक मोदी सरकार की 9 साल की उपलब्धियों की जानकारी पहुंचाएगा.बीजेपी महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष वानाती ने बताया कि मोर्चा की महिला कार्यकर्ता नवरात्रि के समय मोदी कीर्तन के जरिए मोदी सरकार के 9 साल के कार्यकाल की उपलब्धियों की जानकारी महिला मतदाताओं तक पहुंचाएगी. और उन्हें पार्टी के साथ जोड़ने की कोशिश करेंगे. इसके साथ ही रक्षाबंधन के समय रिक्शा और ऑटो वालों के साथ-साथ डिलीवरी बॉयज को राखी बांधकर उन्हें भी सरकार की उपलब्धियों के बारे में बताएंगे. पार्टी ने इसे स्नेह यात्रा का नाम दिया है.

स्वतंत्रता सेनानी की 80 साल की पत्नी को जिंदा जलाने पर फूटा टीएमसी सांसद का गुस्सा, मणिपुर हिंसा को लेकर केंद्र को घेरा

तृणमूल कांग्रेसके राज्यसभा सांसद और राष्ट्रीय प्रवक्ता साकेत गोखले ने कथित तौर पर मणिपुर हिंसा के दौरान जिंदा जला दी गई एक 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला का जिक्र करते हुए बीजेपी और केंद्र सरकार पर निशाना साधा है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जान गंवाने वाली बुजुर्ग महिला एक स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी थी. साकेत गोखले ने घटना को स्तब्ध करने वाला बताया है.साकेत गोखले ने रविवार (23 जुलाई) को ट्वीट किया, एक और स्तब्ध करने वाली घटना में, मणिपुर में भीड़ ने एक 80 वर्षीय महिला को उसके घर में जिंदा जला दिया. इसी के साथ उन्होंने ट्वीट में लिखा, बीजेपी और मोदी सरकार तत्काल कार्रवाई करने के बजाय फर्जी खबरें गढ़कर और विपक्षी राज्यों में एक-एक घटनाओं को चिह्नित करके मणिपुर में चल रहे नरसंहार और जातीय संहार को सही ठहराने की कोशिश में लगी हुई हैं.टीएमसी नेता ने लिखा, मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के रहते हुए बीजेपी ने महिलाओं और आदिवासियों के खिलाफ अकथनीय अत्याचार किए हैं.उन्होंने आगे लिखा, मोदी सरकार ने विपक्षी राज्यों में मामलों की जांच के लिए तुरंत केंद्रीय एजेंसियों को तैनात करती है लेकिन मणिपुर में कोई केंद्रीय एजेंसी शामिल तक नहीं है क्योंकि ये एजेंसियां अब अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने के बजाय राजनीतिक प्रतिशोध का साधन बन गई

हैं.साकेत गोखले ने अपने ट्वीट में जिस बुजुर्ग महिला के साथ घटी नृशंस घटना का जिक्र किया, मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वह 28 मई को काकचिंग जिले के सेरौ गांव में अंजाम दी गई थी. कथित तौर पर मणिपुर इंटरनेशनल यूथ सेंटर ने घटना के बारे में बताया था. जान गंवाने वाली महिला का नाम सोरोखैबम इबेटोम्बी था. घर के सभी दरवाजे बंद थे और महिला अंदर जली हुई पाई गई थी.

स्वतंत्रता सेनानी पति को राष्ट्रपति ने किया था सम्मानित–एचटी की एक रिपोर्ट में कुछ रिपोर्ट्स के हवाले से लिखा गया है कि बुजुर्ग महिला के पति एस चुराचांद सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने सम्मानित भी किया था. इस घटना के बारे में मणिपुर सरकार या राज्य की पुलिस ने कोई बयान नहीं दिया है.

करीब ढाई महीने पहले शुरू हुई थी हिंसा–बता दें कि 19 जुलाई को 4 मई की एक घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर आने पर देशभर में तनाव फैल गया, जिसमें दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर हिंसक भीड़ ने परेड कराई और उनके साथ यौन हिंसा को अंजाम दिया. मणिपुर में 3 मई से हिंसक झड़पें शुरू हुई थीं. मेइती समुदाय की ओर से एसटी दर्जे की मांग के विरोध में पर्वतीय जिलों में आदिवासी एकता मार्च निकाला गया था, उसके बाद हिंसा फैल गई. तब से अब तक राज्य में डेढ़ सौ से ज्यादा लोग हिंसा में जान गंवा चुके हैं.

नाजायज धन्धे किसी भी सूरत में फलने फूलने नही दिये जायेगे..टीआई बीरेश कुशवाह अम्बाह

मुखबिरो की सूचनाओ से पुलिस को मिल रही सफलताये..

केशब पंडित जी अम्बाह

अम्बाह... किसी भी सूरत में थाना इलाको में जुआ, शराब, अबैध शस्त्रो, की क्रय विक्रय शरीखे नाजायज धन्धे किसी

भी सूरत मे अम्बाह पुलिस फलने फूलने नही देगी ऐसे अवैध कृत्यो कोअन्जाम देने वाले मुजरिमो के खिलाफ नियमानुसार कठोर कारवाही की जायेगी यह बात अम्बाह नवागत थाना प्रभारी बीरेश कुशवाह ने पत्रकार बार्ता के दौरान कही उन्होने कहा जितने पुराने अपराधियो के अपराध व गुम इंसान महिला संबधी अपराधो के रोजनामाचाओ को टटोलते हुये उन्होने बताया अब मुखबिर तन्त्र को और मजबूत करने का काम प्रारम्भ कर दिया ताकि अपराधों और अपराधियो के बारे में सटीक सूचनाये पुलिस को मिलती रहे अम्बाह प्रभारी ने माना कि गोपनीयता भंग होने के डर से लोग पुलिस को अपराध व अपराधियो के बारे मे सूचना देने से कतराते है उन्होने कहा कि एक बार पुलिस जनता को यकीन दिलाने में सक्षम होजाये तो उसे मुखबिरो से कारगर आम सूचना मिलना प्रारम्भ हो जायेगी उन्होने बताया हाल ही मे कुछ दिनो मे पुलिस को मुखबिरो द्वारा कामयाबी मिली जिसमें मोबाइल चोरी की व चोरी की गई मोटर साइकिल बरामद कर अपराधी जेल भेजे है कई नामी ग्रामी इनामी फरार अपराधियो को है पकड़ा है जुआ शराब व सट्टा खाईबालो के घरो पर दविश दी है आगे हमे और अच्छे कार्यो की आशा है.

अल्ट्राटेक सीमेंट यूनिट मैहर सीमेंट ने बनाया तमस नदी पर स्टाप डैम

सोनवारी ग्राम वासियों को बड़ी सौगात

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
मैहर सतना

मैहर सीमेंट वर्क्स द्वारा सीएसआर के तहत जल संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत सोनवारी ग्राम की तमस नदी पर एक करोड़ से अधिक लागत का स्टाफ डैम का निर्माण कराया गया जिससे आसपास की लगभग 15 गांव के लगभग 25000 लोग लाभान्वित होंगे स्टॉप डेम का विधिवत लोकार्पण सतना कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा जी द्वारा- जिला पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, मैहर सीमेंट के यूनिट हेड राहुल सहगल, मानव संसाधन प्रमुख करुणेश पांडेय, सीएसआर विभाग प्रमुख विपिन सक्सेना , प्रशासनिक विभाग प्रमुख जेपी सिंह , सिविल विभाग प्रमुख राजेश

टिकुलिया , वित्त विभाग प्रमुख शिवम पोरवाल , प्रशासन विभाग के जिला पंचायत के मुख्य न्यायालय अधिकारी डॉ परीक्षित झाड़े जी, एस. डी. एम. मैहर सुरेश जाटव , तहसीलदार जितेंद्र पटेल , मैहर जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रतिपाल सिंह बागरी, सोनवारी ग्राम पंचायत सरपंच श्रीमती कृष्णा बाई उमाकांत उपाध्याय आदि की उपस्थिति में किया गयाउल्लेखनीय है मैहर सीमेंट वर्क्स अपनी सी. एस. आर. गतिविधियों के माध्यम से संयंत्र के निकटवर्ती गांवो के समग्र विकास के लिए प्रयासरत है जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य, शिक्षा, जल संवर्धन कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा जी ने कहा मैहर सीमेंट वर्क्स द्वारा अपनी

करोड़ों की लागत से बने स्टॉप डेम का लोकार्पण सतना कलेक्टर - श्री अनुराग वर्मा जी ने किया।

सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत निर्मित स्टाप डैम से आसपास के गांवों का जल स्तर बढ़ेगा एवं कृषि के लिए पानी की उपलब्धता रहेगी कार्यक्रम के अंत में सोनवारी ग्राम पंचायत सरपंच श्रीमती कृष्णा उमाकांत ने मैहर सीमेंट प्रबंधन को धन्यवाद किया इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासी व ग्राम पंचायत के सरपंच एवं नागरिक गण उपस्थित थे

रक्षपाल सिंह द्वारा भाजपा छोड़ बसपा में शामिल होने पर बसपाइयों ने निकाली बाइक रैली

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भाजपा युवा नेता रक्षपाल सिंह कुशवाह द्वारा भारतीय जनता पार्टी छोड़कर बहुजन समाज पार्टी भोपाल में शामिल होने के बाद प्रथम नगर आगमन पर भिण्ड विधानसभा में श्री कुशवाह के स्वागत में बहुजन समाज पार्टी कार्यकर्ताओं ने बाइक रैली निकाली,जो नई गल्ला मंडी से सुबह समय 11 बजे से वाई पास रोड़ होते हुए सुभाष तिराहा,लश्कर रोड़, परेड चौराहा,बेटी बचाओ चौराहा, अटेर रॉड बम्बा के किनारे होते हुए इंद्रा गांधी चौराहा,सर्किट हाउस,लहार चुंगी,जेल रोड़,माधोगंज हाट,हनुमान बजरिया,सदर बाजार होते हुए अम्बेडकर नगर बुद्ध बिहार डॉ अम्बेडकर की प्रतिमा पर जाकर समापन किया गया।

भिण्ड पुलिस द्वारा नाईट कॉम्बिंग गश्त में 113 अपराधी वारंटी गिरफ्तार कर अभिरक्षा में लिये गये

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री (भा.पु.से.) के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपुसे के नेतृत्व में भिण्ड जिले के सभी अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) एवं थाना प्रभारियों द्वारा थाने के बल के साथ दिनांक 22/23 जुलाई 2023 की दरम्यानी रात कॉम्बिंग गस्त का अभियान चलाया गया, जिसमें रात्रि के समय होने वाले अपराधों की रोकथाम, फरार आरोपियों को पकड़ने, उन में भय पैदा करने एवं रात्रि के समय वाहनों द्वारा अवैध शराब, अवैध हथियार परिवहन अन्य अवैधानिक गतिविधियों को रोकने एव जनसामान्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु राजपत्रित अधिकारी पुलिस 06 एवं जिला पुलिस बल - 219 की 32 टीम

बनाकर ताबड-तोड कार्यवाही की गयी। उक्त गश्त **के दौरान की गई कार्यवाही निम्नानुसार** है– दहेज एक्ट फरार इनामी 3000 थाना गोरमी हत्या का फरार इनामी 2000 थाना गोहद, एवं फरारी 01 थाना ऊमरी कुल - 04 (02 फरारी एवं 02 इनामी) को गिरफ्तार कर अभिरक्षा में लिया गया, स्थाई वारंट तामील- 26 एवं गिरफ्तारी वारंट तामील-73 कुल 99 आरोपीयो को अभिरक्षा में लिया गया , **अवैध शराब** - आरोपी 08, जप्त शराब 35.09 लीटर,अवैध वैपन आरोपी- 02, वैपन-02,जिलाबदर अपराधियो की चेकिंग संख्या-12, हिस्ट्रीशीटर चेक किए गए 86, गुण्डा चेक-109,एटीएम चेक-80, वाहन चेक-295 ।

उक्त कार्यवाही में समस्त अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) एवं समस्त थाना प्रभारियों द्वारा अपने बल के साथ उपस्थित होकर सराहनीय कार्यवाही की गई। उक्त कार्यवाही जन सामान्य की सुरक्षा एवं अपराध मुक्त भिण्ड हेतु जारी रहेगी।

भिण्ड पुलिस द्वारा समाधान आपके द्वार के अर्न्तगत 2376 प्रकरणों का निराकरण

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर के प्रशासनिक न्यायाधीश न्यायमूर्ति रोहित आर्या के निर्देशानुसार ग्वालियर चम्बल संभाग में जनसामान्य के ऐसे शमनीय प्रकरण जिनका आपसी समझौता के द्वारा निराकरण किया जा सकता है, इसके लिये समाधान आपके द्वार योजना नियत अन्तराल से निरन्तर चलायी जा रही है। जिसके अन्तर्गत राजस्व विभाग, पुलिस विभाग, वन विभाग, विधुत विभाग के समझौता योग्य प्रकरणों को सम्मलित कर लोक अदालत लगाकर निराकरण किया जाता है।दिनांक 22/07/2023 को जिला न्यायाधीश द्वारा जिला न्यायालय भिण्ड, न्यायालय लहार, न्यायालय गोहद में समझौता शिविर / लोक अदालत का आयोजन कराया गया। उक्त लोक अदालत में पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री (भा.पु.से.) के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपुसे के नेतृत्व में पुलिस विभाग द्वारा जनसामान्य के शमनीय प्रकरणों में संबंधितों से निरंतर सम्पर्क कर कुल 2376 (आपराधिक प्रकरण 74, एफआर 222, ईआर 40, एमव्ही एक्ट 353 शिकायत 20 एवं अन्य प्रकरण 1667) प्रकरणों का सफलता पूर्वक निराकरण हुआ। जोकि पूर्व समझौता शिविर / लोक अदालत दिनांक 08/04/2023 में 360 प्रकरणों का निराकरण हुआ था। वर्तमान लोक अदालत में 2376 प्रकरणों का निराकरण हुआ जोकि पूर्व लोक अदालत की तुलना में 6 गुना अधिक है। जो कि पुलिस विभाग के अथक परिश्रम एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिणाम है।उक्त कार्यवाही में समस्त अनुविभागीय अधिकारी पुलिस थाना प्रभारीगण, कलस्टर अधिकारी / कर्मचारी एवं पुलिस बल द्वारा उक्त प्रकरणों के सफलता पूर्वक निराकरण कराने में सराहनीय भूमिका रही है।

तुर्रा गौहानी में वृक्षारोपण कर कांग्रेसियों ने मनाई चंद्रशेखर आजाद व बालगंगाधर तिलक जयंती

आजाद व तिलक का जीवन मानव समाज के लिए प्रेरणा का विषय - आशुतोष

पुष्पांजलि न्यूज
राजेश कुमार तिवारी

सतना। आजचित्रकूट विधानसभा के कांग्रेस नेता व अखिल भारतीय असंगठित कामगार कांग्रेस के प्रदेश महासचिव आशुतोष द्विवेदी की अगुवाई में चित्रकूट विधानसभा के तराई अंचल ग्राम पंचायत तुर्रा में भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने सर्वस्य का बलिदान करने वाले अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद जी व महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयंती के पावन पर्व पर ग्राम पंचायत भवन तुर्रा में वृक्षारोपण किया गया इस मौके पर कांग्रेस नेता श्री द्विवेदी ने कहा की भारत माता के वीर सपूत चंद्रशेखर

आजाद व महान समाज सुधारक व महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जीवन भारत माता की सेवा के लिए समर्पित रहा है आज ही के दिन इन महान आत्माओं ने पृथ्वी पर जन्म लिया था और हमारे भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने प्राण निछावर किए थे ऐसे महापुरुषों का जीवन हम सब मानव समाज के लिए प्रेरणा का विषय है वृक्षारोपण में प्रमुख रूप से तुर्रा ग्राम पंचायत के वरिष्ठ समाजसेवी रूद्र प्रताप सिंह युवा समाजसेवी सचिन तिवारी कैलाशपुर प्रकाश जयसवाल (उपसरपंच) प्रकाश सिंह गुड्डू,सूरज सिंह,बालमुकुंद सेन,रामचंद्र मवासी,कमतू यादव,अवध सिंह,कौशल सिंह,राजललन सिंह,महेंद्र सिंह,मनोज मवासी,नीरज सिंह,शैलेंद्र सिंह,अंशु रैकवार,उदय सिंह सहित कई कांग्रेसी व समाजसेवी मौजूद रहे

मप्र प्रभारी अग्रवाल के समझ इरशाद ने रखी कार्यकर्ताओ की बात

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव एवं मध्य प्रदेश के प्रभारी जे पी अग्रवाल से ग्वालियर में जिला कांग्रेस कमेटी जिला संगठन मंत्री इरशाद अहमद ने कार्यकर्ताओं की बात रखी । जिला संगठन मंत्री इरशाद अहमद के साथ में एवरन सिंह बघेल,रहमान खान,पप्पू ,इसाक खान,जान मोहम्मद मंसूरी आदि लोग उपस्थित रहे।

पांचवे दिवस की कथा में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म पर झूमे श्रद्धालु। ग्राम नीमगाँव में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का हो रहा आयोजन आचार्य राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री जी करा रहे भागवत कथा का रसपान

उमाकान्त शर्मा पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। जिले के मेहगांव विधानसभा क्षेत्र के ग्राम नीमगाँव में प्राचीन हनुमान जी मंदिर पर सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें भिण्ड के आचार्य राजेन्द्र प्रसाद जी श्रीवृन्दावन धाम अपने श्री मुख से भागवत कथा कह रहे हैं। रविवार को भागवत कथा में कृष्ण भगवान के जन्म की लीला का वर्णन हुआ जिसमें भगवान बालकृष्ण के स्वरूप की आकर्षक झांकी भी प्रदर्शित की गई । इस अवसर पर उपस्थित महिलाओं के द्वारा बधाई गीत गाए गए तथा खूब आनंद उल्लास के साथ नृत्य किया गया।तथा समस्त ग्रामवासियों की तरफ से भगवान बाल कृष्ण के जन्म के अवसर पर प्रसादी का वितरण किया गया।भागवत कथा के पारीक्षत ग्राम नीमगाँव के बजरंग वली को बनाया गया है।सभी ग्रामीणों ने भगवान कृष्ण के बाल रूप की आरती की। कथा में बड़ी संख्या में साधु संत तथा आसपास के गांव के लोग मौजूद रहे।भागवत कथा का समापन 26 जुलाई को है।भागवत कथा में प्रतिदिन कथा समापन के पश्चात श्रोताओं एवं संत जनों को भंडारे के प्रसाद का वितरण किया जा रहा है। कथा स्थल ग्राम नीमगाँव के हनुमानजी मंदिर पर पहुंचने के लिए भिण्ड से बरासों रोड होते हुए ग्राम नीमगाँव तक पहुंचा जा सकता है।

आईमाता वडेर केगेरी में श्री आईजी राजस्थानी फिल्म का किया प्रदर्शन

पुष्पाजंली टुडे /
नारायणलाल सेंणचा

बेंगलुरू। केगेरी में स्थित श्री आईमाता वडेर प्रांगण में शनिवार रात को श्री आईजी नामक राजस्थानी फिल्म का प्रदर्शन किया गया । फिल्म निर्माता भंवरलाल चोयल ने बताया की फिल्म देखने के लिए बड़ी संख्या में दर्शकों ने भाग लिया । वडेर दर्शकों से खचाखच भर गया । उन्होंने बताया की फिल्म का प्रदर्शन सम्पूर्ण दक्षिण भारत में किया जाएगा। ये फिल्म निःशुल्क दिखाया जाएगा। इस मौके पर वडेर के अध्यक्ष कन्हैयालाल लचेटा सचिव सुरेश सीरवी, दुर्गाराम गेहलोत, सह-सचिव सुरेश हाम्ब?,

रूपाराम राठौ? सह-कोषाध्यक्ष नाथूराम, मल्लाराम, रमेश, नेमाराम, मांगीलाल, भोलाराम , राजाराम, हिरालाल, पूर्व अध्यक्ष भोमाराम भायल, मंगलाराम हाम्बड़, खेल मंत्री दुर्गाराम लचेटा मौजूद रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे कर्नाटक सीरवी महासभा के अध्यक्ष वीरमराम सोलंकी महिला विंग अध्यक्ष लीलाबाई चोयल का समाज की ओर से सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में फिल्म निर्माता भंवरलाल चोयल, निर्देशक हेमंत चौधरी ,लखन चौधरी का समाज के पदाधिकारीओं ने शॉल माला मोमेंटो द्वारा बहुमान किया । फिल्म देखने के लिए केगेरी नाईनहल्ली मैसूर रोड क्षेत्र से बड़ी संख्या में दर्शकों ने भाग लिया । इस कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था नवयुवक मंडल के कार्यकर्ताओं ने संभाली ।

बुजुर्गों की संगति करोः शीतल संत राजाराम

पुष्पाजंली टुडे /नारायणलाल सेंणचा

बेंगलुरू। सीरवी समाज एच.एस.आर ले आऊट वडेर के तत्वाधान में आयोजित चातुर्मास विराजित संत शीतल राजाराम ने अपने प्रवचन में कहा की बुजुर्गों की संगति करो, क्योंकि बुजुर्गो के चेहरे की एक-एक झुर्री पर हजार-हजार अनुभव लिखे होते हैं। उनके कांपते हुए हाथ, हिलती हुई गर्दन, लड़खड़ाते हुए कदम और मुरझाया हुआ चेहरा सन्देश देता हैं कि जो भी शुभ करना है । वह आज, अभी और इसी वक्त कर लो ,कल कुछ नहीं कर पाओगे। बूड़ा इंसान इस पृथ्वी का सबसे बड़ा शिक्षालय हैं, क्योंकि उसे देखकर उगते सूरज की डूबती कहानी का बोध होता हैं। वडेर के सचिव लक्ष्मणराम आगलेचा ने स्वागत किया । इस मौके पर कोषाध्यक्ष भंवरलाल बर्फा, सह- कोषाध्यक्ष केनाराम मुलेवा, मांगीलाल सोलंकी ,जगाराम परीहारिया ,गेनाराम सेंणचा एवं नवयुवक मंडल महेंद्र राठौड़, सचिव मदनलाल राठौड़ कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल, उपाध्यक्ष टीकमराम आगलेचा नवयुवक मंडल सदस्य घनश्याम, हिमताराम हाम्बड़, किशोर राठौड़ सहित बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद रही

एलन पूनम श्रीरामपुरम में भक्तांमर अनुष्ठान में उमड़ा जनसैलाब

पुष्पाजंली / टुडे

बेंगलुरू। मुनि श्री राज पदम सागर जी महाराज साहब मुनि श्री श्रमन पदम सागर जी की पावन निश्रा में भक्तामर महा अनुष्ठान हुआ ।इस अनुष्ठान में 800 से अधिक पुण्य सालियों ने लाभ लिया 140 से भी अधिक यंत्र सहित जोड़े श्रावक श्राविका ने परमात्मा की भक्ति करने का अनुपम लाभ लिया। भक्तामर स्तोत्र श्री ऋषभदेव परमात्मा की स्तुति के रूप में किया है । षमुनि श्री राज पदम सागर जी महाराज साहब ने विस्तार से अनुष्ठान करने से क्या-क्या लाभ होता है उसकी विवेचन की उन्होंने कहा कि हमारे पूर्व आचार्यों ने हमारे लिए ऐसे स्तोत्र को रचना की है हम मिथ्यात्व में नहीं भटक जाए हम कहीं अनंत संसार ना बढ़ा ले आस्तिक से नास्तिक बनाने की भावना को ढरढ करते हुए परमात्मा पर विश्वास और सच्चे मन से जो अजय परमात्मा की भक्ति करता है उनका जो भी मनोवांछित है वह सब पूर्ण हो जाते हैं ।जो परमात्मा की भक्ति तन मन से करता है उसको बाहर भटकना नहीं पड़ता है ।और इस पूरे भक्तामर अनुष्ठान में मां महप्रभावक परम पूज्य आचार्य देव श्री मानतुगं सुरीश्वर जी महाराज ने 44 - गाथाओं द्वारा जो हमारे दुख दर्द पीड़ा मन स्थिर नहीं रहता है और ज्ञान नहीं चढ़ता है तो उसके भी स्त्रोत्र की गाथा का पाठ स्मरण करने से हमारी जो भी समस्या है। वह सब दूर हो जाती हैं हर रोज व्याख्यान परम पूज्य महाराज साहब की निश्रा में 9ः00 से 10ः00 बजे है संघ सचिव नरेंद्र आच्छा ने बताया कि आज प्रातः काल से ही महा अनुष्ठान में जनसैलाब उमड़ा और देखते ही देखते समणि भवन के तीनों हॉल खचाखच भर गए । लोगों ने स्थिरता रखते हुए स्थिरता रखते हुए पूरे महा अनुष्ठान का का लाभ लिया !आज के अनुष्ठान के लाभार्थी मनसुखलाल अभिषेक कोठारी रहे !

सतना से रीवा आ रही नशीली कफ सिरप की खेप को रामपुर बघेलान पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ा!

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतना। जिले के रामपुर थाना अंतर्गत हाइवे से गुजरते डस्टर गाड़ी सहित तीन तस्कर पकड़ाए,मिल रही जानकारी के अनुसार कबाड़ी मोहल्ला निवासी गुप्पू सहित दो तस्कर गिरफ्तार। पुलिस कर रही फिलहाल पूछताछ ,सतना एसपी आशुतोष गुप्ता को मुखबिर से मिली सूचना के बाद रामपुर बघेलान थाना प्रभारी संदीप चतुर्वेदी को स्टाफ के साथ मिली सफलता।

जप्ती-ओंनरेक्स सिरप मात्रा-110 सीसी 18700ड़ ,डस्टर कार सिल्वर कलर गाड़ी नम्बर ॥क्र26 7667 मूल्य 618700ड़ड़गिरफ्तार आरोपी-1ड़सुनील नागर उर्फ (रिंकू) निवासी रीवा, 2ड़राजन सिंह उर्फ गुप्पू लोनिया कबाड़ी मौहल्ला रीवा, 3ड़अमर पाठक वार्ड नम्बर 19 घोघर मोहल्ला रीवा!

कोलगवां पुलिस को मिली सफलता, देशी 315 बोर कट्टा कारतूस के साथ आरोपी गिरफ्तार

धारा 25/27 आर्म्स एक्ट के तहत की गई कार्यवाही

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतना।श्री आशुतोष गुप्ता (भापुसे) पुलिस अधीक्षक महोदय, सतना के कुशल निर्देशन एवं श्री महेन्द्र सिंह चौहान सीएसपी सतना के मार्गदर्शन पर मिली कामयाबी

घटना विवरण- दिनांक 22/07/23 की रात्रि जरिए मुखविर सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति मटमैले कलर की टी शर्ट ,नीले कलर की जीन्स पहने रीवा बाईपास आरजू ढाबा के आगे पुलिया के पास अवैध हथियार अपने कमर मे दाहिने साईड खोसे है किसी के इंतजार मे खडा है मुखबिर सूचना पर रेड कार्यवाही करने पर आरजू ढाबा के आगे

पुलिया के पास एक व्यक्ति खडा दिखा जिसे घेराबंदी कर पकडा गया व तलाशी ली गई तो कमर मे पैंट के नीचे दाहिने तरफ देशी कट्टा 315 बोर खोंसे मिला जिसमे चेंबर मे 3.15 बोर का जिन्दा राउन्ड, बैरल मे फसा था जिसे सुरक्षा की दृष्टि से राउन्ड को बैरल से अलग किया गया व व्यक्ति से नाम पता पूछने पर अपना नाम सर्वेश सिह परिहार उर्फ छोटू निवासी अकौना नागौद का होना बताया । जिससे कट्टा रखने के संबंध मे अनुज्ञा पत्र माँगा गया जो नही होना बताया आरोपी का यह कृत्य धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत दण्डनीय अपराध पाए जाने से आरोपी को गिरफ्तार कर अपराध धारा सदर का पंजीबद्ध कर पेश न्ड़ायालय किया गया जहाँ से आरोपी को जेल भेज दिया गया है।

जप्त शस्त्र का विवरण- एक अदद 315 बोर का देशी कट्टा एवं 01 नग जिंदा राउंड कीमती 10 हजार रुपये

ईनाम पता गिरफ्तार आरोपी- सर्वेश सिह परिहार उर्फ छोटू पिता पुष्पेन्द्र सिह परिहार 22 वर्ष निवासी अकौना पोस्ट बरठिया थाना नागौद जिला सतना

सराहनीय भूमिका- उपरोक्त कार्यवाही में निरीक्षक सुदीप सोनी थाना प्रभारी कोलगवां, प्र.आर. कमलाकर सिंह, रामानुज शर्मा, आर. चालक धर्मेन्द्र पाठक की सराहनीय भूमिका रही है

भँवरपुरा थाना प्रभारी व एसडीओपी घाटीगाँव की चारपाई चौपाल से सगे भाइयों का सालों पुराना विवाद एक घण्टे में सुलझा

एक दिन पहले दोनों भाइयों शैलेन्द्र व भरत गुर्जर में हुई थी हाथापाई, दोनों गए थे रिपोर्ट लिखवाने

रिपोर्ट - एड.रहीश भैया

वर्तमान में घाटीगांव न्यायालय द्वारा समझौता समाधान आपके द्वार के माध्यम से पुलिस प्रशासन को जमीनी विवाद निपटाने के लिए निर्देशित किया। ग्वालियर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश चंदेल के निर्देशन में घाटीगाँव एसडीओपी संतोष पटेल व भँवरपुरा थाना प्रभारी वलवीर मावई द्वारा अनोखी पहल करते हुए गांव में ही पेड़ के नीचे चारपाई चौपाल लगाई गई। चौपाल में एक दिन पहले भँवरपुरा निवासी गुर्जर भाईओं में हाथापाई और मारपीट हो गयी जिसकी रिपोर्ट लिखवाने दोनों पक्ष थाने आये थे। थाना प्रभारी द्वारा भविष्य को देखते हुए गांव में रिश्तेदार व गांववालों के माध्यम से पेड़ के नीचे चार पाई की चौपाल लगाई और उसमें दोनों भाईओं की मौके पर जमीन बराबर बंटवाकर आपस मे समझौता करवाया। समझौते की खुशी में शैलेन्द्र गुर्जर ने सभी गांव वालों को रबड़ी बांटकर खुशी जाहिर की क्योंकि वर्षों का विवाद 1 घण्टे में निपट गया जो कोर्ट कचेहरी में वर्षों चलता।

जयंती बनी पुलिस शिकायत बोर्ड की सदस्य

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतना।सतना जिले के प्रभारी मंत्री विजय शाह की अनुशंसा पर जिला पंचायत सदस्य जयंती महेश तिवारी को जिला पुलिस शिकायत बोर्ड का सदस्य नामांकित किया गया है। पुलिस अधीक्षक सतना ने पत्र जारी पर नामांकित सदस्य को सूचित किया है।

थाना कोटर पुलिस की सफलता, रात मे घर का छप्पर काटकर सामान चुराने वाले को गिरफ्तार कर किया गया समान बरामद

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

कोटर सतना।श्री आशुतोष गुप्ता पुलिस अधीक्षक महोदय सतना के कुशल निर्देशन एवं ख्याति मिश्रा उप पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सतना के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी कोटर उनि रावेन्द्र व्दिवेदी के नेतृत्व में मिली कामयाबीदि.23.07.23 को फरियादी छेदीलाल साहू पिता स्व. ददिया साहू उम्र 58 वर्ष निवासी गोरइया थाना कोटर का रिपोर्ट किया कि उसके गांव का शादिक उर्फ बाबू पिता कुद्दूश द्वारा रात को करीबन 11 बजे मेरे घर का छप्पर काटकर अंदर घुसकर घर से थाली व अन्य सामान चुरा ले गया जिसकी रिपोर्ट पर थाने मे आरोपी के विरुद्ध अपराध क्र. 190/23 धारा 457,380 ताहि का प्रकरण पंजीबद्ध कर जांच में लिया जाकर आरोपी के कब्जे से चोरी गया मसरुका बरामद किया गया आरोपी को दि.23.08.23 को गिरफ्तार किया जाकर माननीय न्यायायलय के समक्ष पेश किया गया जहां से माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी को जेल भेज दिया गया है ।थाना प्रभारी उनि रावेन्द्र व्दिवेदी, उनि बी.एस तोमर, सउनि नरेश सिंह, प्र. आर. देवेन्द्र सिंह बघेल आर.210 अनिल पाण्डेय, म.आ.ज्योती धाकड ।

अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद जी की जयंती पर प्रांत अध्यक्षा के द्वारा किया गया शंखनाद

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भिंडी ऋषि की तपोवन भूमि भिण्ड के संस्कृति गार्डन मे आजाद अध्यापक संघ की प्रांत अध्यक्षा मुख्य अतिथि के द्वारा किया गया ÷आजाद शंखनाद का आगाज । भिण्ड शहर में पहली वार नारी शक्ति के रूप में आजाद अध्यापक संघ की प्रांत अध्यक्ष बहिन शिल्पी शिवान की गरिमामयी उपस्थिति 23 जुलाई रविवार को दोपहर 12 बजे संस्कृति मैरिज गार्डन भिण्ड मे हुई ।कार्यक्रम के प्रारंभ में अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद जी की जयंती मुख्य अतिथि एवं शिक्षकगण द्वारा मनाई गयी।इसके के बाद प्रदेश कार्यकारिणी अध्यक्ष संतोष लहारिया ने अपने उद्बोधन में प्रान्त अध्यक्षा शिल्पी शिवानजी के समक्ष शपथ ली की उनकी इस लड़ाई मे चंबल के प्रत्येक शिक्षक शिक्षिकाएं पूरे मनोयोग के साथ आपके साथ है । इस अवसर पर संभागीय अध्यक्ष शैलेश त्रिपाठी ने सरकार को चेतावनी दी उन्होंने कहा कि अगर हमारी माँग पूरी नही हुई तो हम समस्त शिक्षक साथी समय आने पर सरकार को बाहर का रास्ता दिखाने का काम करेंगे और उन्होंने कहा कि अगर हमारी माँगे सरकार ने पूरी की तो हम पुनः सरकार बनाने मै उनका सहयोग करेंगे । कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रान्त अध्यक्षा बहिन शिल्पी शिवान ने अपने उद्बोधन मे सर्वप्रथम चंबल की माटी और बनखंडेश्वर महाराज को प्रणाम किया। प्रान्त अध्यक्षा ने अपने उद्बोधन में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री से आग्रह किया की हम शिक्षक बहिने भी आपकी लाडली बहिने है तो हमारे साथ ये अन्याय क्यों हमको पेंशन एवं वरिष्ठता सरकार क्यों नही दे रही है उन्होंने कहा विधायक,सांसद को जिस पर एक दिन का मंत्री बनने पर भी पेंशन दी जाती है तो हमें क्यों नही दी जा रही है। उन्होंने कार्यक्रम के मध्य मे गंगाजल एवं शंख को हाथ में लेकर शंखनाद किया और कहा की ये शंखनाद चंबल की धरा भिण्ड से किया जा रहा है

सन्नी भदौरिया जो की पेरो से दिव्यांग है उसको शासन की तरफ से मोटराइज्ड ट्राई साइकिल अप्रैल 2023 को दी गयी थी लेकिन अब उसकी बैटरी एवं चार्जर खराब हो गया लेकिन शासन की तरफ कोई सुनवाई नहीं जब यह खबर जनशक्ति वेलफेयर सोसाइटी के राष्टीय अध्यक्ष एवं समाजसेवी अरुणेश सिंह भदौरिया को लगी तो उन्होंने बच्चे की मदद करने के लिए तुरंत दैनिक भास्कर की कटिंग को जनशक्ति वेलफेयर सोसाइटी के फेसबुक पेज पर पोस्ट कर सम्वन्धित व्यक्ति को संपर्क करने के लिए कहा और अपना मोबाइल नंबर 7987341102 भी शेयर किया हुआ है खबर लिखे जाने तक सन्नी भदौरिया ने उनसे संपर्क नहीं किया लेकिन जैसे ही संपर्क करेगा उसकी प्रॉब्लम हल कर दी जाएगी।

समाजसेवी
अरुणेश सिंह भदौरिया

भिंड जिले के अटेर क्षेत्र के गांव बढ़पुरा में भगवान परशुराम मंदिर के लिये किया गया भूमिपूजन

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

अटेर। बड़े हर्ष के साथ आप सभी को सूचित किया जा रहा है कि परा प्रताप पुरानी मुख्य मार्ग पर स्थित बड़पुरा ग्राम में रामजानकी मंदिर परिसर जो लगभग कच्चे 2 या ढाई बीघा के क्षेत्रफल में स्थित है उसी परिसर में समस्त देवी देवताओं की कृपा से आज हम सबके आराध्य भगवान परशुराम के मंदिर के लिये भूमि पूजन कार्यक्रम पूर्ण हर्षोल्लास से संपन्न हुआ !कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी श्री रामकुमार पुरोहित जिला उपाध्यक्ष श्री परशुराम सर्व ब्राह्मण संघ एवं प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री परशुराम सर्व ब्राह्मण संघ हुलापुरा, मुख्य अतिथि श्री विकास शर्मा जी भाजपा कार्यसमिति जिला भिण्ड एवं विधायक प्रति निधि, विशिष्ठ अतिथि श्री सत्यप्रकाश पाठक जी प्रदेश महासचिव श्री परशुराम सर्व ब्राह्मण संघ, रहे।मंदिर के पुजारी श्री नाथूराम महाराज द्वारा भूमिपूजन कार्यक्रम किया गया पांडित्य कार्य श्री राधाकृष्ण शर्मा जी पानी के द्वारा संपन्न हुआ कार्यक्रम का आभार परशुराम मंदिर निर्माण समिति अध्यक्ष श्री रामशरण लंबर जी द्वारा किया गया ! कार्यक्रम में मुख्य रूप से आलोक विनोद शर्मा जी भिंड, अरुण शर्मा जी रहे।पावई, बालक राम शर्मा परा उदय कुमार दीक्षित जी बड़पुरा, श्री कैलाश नारायण जी बड़पुरा, प्रमोद कुमार दुबे जी जिला अध्यक्ष सैनिक प्रकोष्ठ श्री परशुराम सर्व ब्राह्मण संघ, कृष्ण मुरारी जी परा, कमलेश शर्मा जी बड़पुरा, कौशल किशोर जी बड़पुरा, नमोनारायण दीक्षित गुरुनारायन शर्मा, रामकिशोर शर्मा, ब्रजमोहन पुरोहित, रामबिलास मास्टर, आदि लोग उपस्थित

2 अगस्त को पेंशनर के अन्य संगठनो एवं कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारियों से करेंगे चर्चा

दैनिक पुष्पांजली टुडे

उज्जैन। पुलिस पेंशनर एसोसिएशन के प्रांत अध्यक्ष एमपी सिंह परिहार जी एवं पेंशनर एसोसिएशन मध्य प्रदेश के द्वारा किए गए संयुक्त प्रयासों से पेंशनर के अन्य संगठनो एवं कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारियों से चर्चा कर निर्णय लिया गया है कि दिनांक 2 अगस्त 2023 को एक बैठक का आयोजन सामुदायिक भवन पुलिस लाइन उज्जैन में किया जा रहा है उक्त बैठक में सहभागिता हेतु प्रांतीय पदाधिकारी एवं मुख्य पदाधिकारियों को ही श्री एमपी सिंह परिहार प्रांता अध्यक्ष पुलिस एसोसिएशन द्वारा आमंत्रित किया गया है बैठक का समय2 अगस्त2023 को 11ः00 बजे रखा गया है जिसमें पेंशनरस की लंबित मांगों का निराकरण कराए जाने हेतु संयुक्त संघर्ष समिति का गठन किया जावेगा तथा आंदोलन की रूपरेखा तैयार की जाएगी पेंशनर्स के हितों की रक्षा करने हेतु जो भी संगठन क्रियाशील हो उन सभी संगठनों को खुले दिल से आमंत्रित किया गया है जो भी संगठन आना चाहेअपने आने की सूचना श्री एमपी सिंह परिहार प्रांत अध्यक्ष पुलिस एसोसिएशन के मोबाइल नंबर 7000702822 अवश्य सूचित करें यह जानकारी पेंशनर एसोसिएशन मध्य प्रदेश के प्रदेश महामंत्री मोहन सिंह कुशवाह श्री सरनाम सिंह जादौन अध्यक्ष प्रांतीय सलाहकार समिति श्री आरपी शर्मा उप प्रांताअध्यक्ष श्री भंवर सिंह जादौन संभागीय अध्यक्ष ग्वालियर संभाग ग्वालियर श्री एनके गोस्वामी प्रांतीय सचिव श्री डॉक्टर प्रीतम सिंह कुशवाह प्रांतीय संगठन सचिव द्वारा संयुक्त रूप से जारी की गई प्रेस विज्ञप्ति मेंबैठक का आयोजन करने बालों की प्रशंसा की गई है एवं आमंत्रित पदाधिकारियों को बैठक में शामिल होने की अपील की गई हैआपका मोहन सिंह कुशवाह प्रांतीय महामंत्री पेंशनर एसोसिएशन मध्य प्रदेश

चित्रकूट की मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित महाराजाधिराज मतगजेंद्र नाथ शिव, भगवान श्री राम की तपोस्थली धर्म नगरी चित्रकूट का एक प्रमुख मंदिर

पुष्पांजलि टुडे

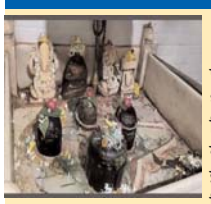

चित्रकूट में भगवान श्री राम ने वनवास के काल के दौरान इनसे आज्ञा लेने के पश्चात ही यहां पर कामदगिरि पर्वत में साड़े 11 वर्ष से अधिक का समय बिताया था ऐसी मानता है कि ब्रह्मा जी द्वारा घोर तपस्या की गई थी जिसके बाद एक शिवलिंग उत्पन्न हुआ था जिन्हें मतवाले हाथी की तरह उत्पन्न उस शिवलिंग को ब्रह्मा जी ने अपना आराध्य बनाया और उन्हें इस क्षेत्र का क्षेत्रपाल माना था। उन्हें इस क्षेत्र का राजा भी कहा जाता है दूसरा शिवलिंग भगवान श्रीराम ने स्थापित किया है वहीं तीसरे शिवलिंग के बारे में ऐसे मानता है कि उसे अत्रि मुनि द्वारा स्थापित किया गया है वहीं चौथे शिवलिंग को लेकर मानता है कि लंकेश रावण के पूर्वज ऋषि विसश्रवा ने शिवलिंग की स्थापना की थी चित्रकूट की मंदाकिनी तट पर रामघाट स्थान पर स्थित यह मंदिर 4 शिवलिंग का एक अद्भुत मंदिर है यहां पर प्रतिदिन सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर भगवान शिव का अभिषेक करते हैं और अपनी मनोकामना ओं की पूर्ति की कामना करते हैं सोमवार को यहां पर श्रद्धालु हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। और इसी जगह से भगवान शिव ने लक्ष्मण जी को सांकेतिक संदेश दिया था के आप अपनी वाणी और अपने चरित्र पर संयम करके संसार में कहीं भी रहे कहीं आपको कोई समस्या नहीं होगी..... शिव महापुराण में इस मंदिर का और शिवलिंग का वृहद वर्णन है.... इस मंदिर में चार पहर की आरती और विशेष अभिषेक पूजा प्रतिदिन की जाती है सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ पहुंचने लगती है

24 जुलाई 2023 को पुण्य तिथि पर विशेष

क्या 99 साल बाद भी किसी को इतनी शिद्दत के साथ याद किया जा सकता है.नरसिंहगढ़ रियासत के अमर शहीद वीर योद्धा राजकुमार कुंवर चैन सिंह की यही है कहानी

भोपाल/सीहोर। मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट स्थित नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार कुंवर चैन सिंह 24 जुलाई 1824 को अंग्रेज हुकूमत के विरुद्ध लड़ते हुए अपने 54 विश्वस्त साथियों के साथ वीर गति को प्राप्त हुए थे। इनमें हिम्मत खां और बहादुर खां के नाम प्रमुख हैं। साथ

पुण्य तिथि पर आज होगा श्रद्धांजलि कार्यक्रम रघुवर दयाल गोहिया

ही इस युद्ध में चैन सिंह के साथ आई वीरांगना उमेदा बाई भी शहीद हुई थीं जिनके बारे में कहा जाता है कि वह युद्ध कला में निपुण होने के साथ साथ कुशल नृत्यांगना भी थीं। इस युद्ध में सभी जाति, वर्ग और धर्म के वीर योद्धा शामिल हुए थे।1857 के सशस्त्र स्वाधीनता संग्राम से लगभग 33 वर्ष पूर्व की यह घटना कुंवर चैन सिंह को मालवा अंचल के पहले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।शहीद चैन सिंह को लेकर भोपाल दूरदर्शन केंद्र ने कुछ साल पहले एक शार्ट मूवी भी प्रदर्शित की थी। संवत 1951 में बुद्धा सिंह ने कुंवर चैन सिंह जी का ख्याल नाम से भी एक पुस्तक लिखी है। जिसमें सीहोर

में हुए युद्ध का विस्तार से वर्णन है। यह पुस्तक अंबादत्त भारतीय स्मृति पत्रकारिता संग्रहालय एवं शोध संस्थान में सुरक्षित है। इसके अलावा इनोवेंट सेडेट स्टूडेंट सोसायटी भोपाल ने साल 2013 में शहीद भवन के सभागार में ÷अलख÷ नाम से एक नाटक का मंचन भी किया था। जिसका निर्देशन प्रखर सक्सेना ने किया था। इस नाटक में चैन सिंह की भूमिका शाजापुर जिले की कालापीपल तहसील के युवा रंगकर्मी प्रशांत विलय ने निभाई थी। कुंअर चैन सिंह पर अनेक लोगों ने काफी कुछ लिखा है। इसके बाद भी अभी उनके बारे में गहराई के साथ

शोध कार्य होना अभी बाकी है। मध्य प्रदेश सरकार ने वर्ष 2015 से सीहोर स्थित कुंवर चैन सिंह की छतरी पर गार्ड ऑफ ऑनर प्रारम्भ किया है। इस दिन यहां अमर शहीदों का पुण्य स्मरण किया जाता है और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये जाते हैं। इसके अलावा राजगड़ जिले के नरसिंहगड़ में भी 24 जुलाई को राज घराने के छार बाग स्थित कुंअर चैन सिंह के समाधि स्थल पर भी हर साल श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

फौजी छावनी नहीं होती तो शहादत भी न होती -सन 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भोपाल रियासत के तत्कालीन नवाब से समझौता कर सीहोर में एक हजार सैनिकों की छावनी स्थापित की। कंपनी द्वारा नियुक्त पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक को इन फौजियों का प्रभारी बनाया गया। इस फौजी टुकड़ी का वेतन भोपाल रियासत के शाही खजाने से दिया जाता था। समझौते के तहत पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक को भोपाल सहित नरसिंहगढ़, खिलचीपुर और राजगढ़ रियासत से संबंधित राजनीतिक अधिकार भी सौंप दिए गए। बाकी तो चुप रहे, लेकिन इस फैसले को नरसिंहगढ़ रियासत के युवराज कुंवर चैन सिंह ने गुलामी की निशानी मानते हुए स्वीकार नहीं किया।

अंग्रेज परस्त दीवान और मंत्री की हत्या का आरोप-रियासत के दीवान आनंदराम बख्शी और मंत्री रूपराम बोहरा अंग्रेजों से मिले हुए थे। यह पता चलने पर कुंवर चैन सिंह ने इन दोनों को मार दिया। मंत्री रूपराम के भाई ने इसकी शिकायत कलकत्ता स्थित गवर्नर जनरल से की, जिसके निर्देश पर पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक ने कुंवर चैन सिंह को भोपाल के नजदीक बैरसिया में एक बैठक के लिए बुलाया। बैठक में मैडॉक ने कुंवर चैन सिंह को हत्या के अभियोग से बचाने के लिए दो शर्तें रखीं। पहली शर्त थी कि नरसिंहगढ़ रियासत, अंग्रेजों की अधीनता स्वीकारे। दूसरी शर्त थी कि क्षेत्र में पैदा होने वाली अफीम की पूरी फसल सिर्फ अंग्रेजों को ही बेची जाए।

सीहोर आने का दिया आदेश-कुंवर चैन सिंह द्वारा दोनों ही शर्तें ठुकरा देने पर मैडॉक ने उन्हें सीहोर पहुंचने का आदेश दिया। अंग्रेजों की बदनीयती का अंदेशा होने के बाद भी कुंवर चैन सिंह नरसिंहगढ़ से अपने विश्वस्त साथी सारंगपुर निवासी हिम्मत खां और बहादुर खां सहित 54 सैनिकों के साथ सीहोर पहुंचे। जहां पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक और अंग्रेज सैनिकों से उनकी जमकर मुठभेड़ हुई। कुंवर चैन सिंह और उनके मुट्ठी भर विश्वस्त साथियों ने शस्त्रों से सुसज्जित अंग्रेजों की फौज से डटकर मुकाबला किया। घंटों चली लड़ाई में अंग्रेजों के तोप खाने ओर बंदूकों के सामने कुंवर चैन सिंह और उनके जांबाज लड़ाके डटे रहे।

अष्ट धातु की तोप काट दी थी तलवार के प्रहार से -ऐसा कहा जाता है कि युद्ध के दौरान कुंवर चैन सिंह ने अंग्रेजों की अष्ट धातु से बनी तोप पर अपनी तलवार से प्रहार किया जिससे तलवार तोप को काटकर उसमे फंस गई। मौके का फायदा उठाकर तोपची ने उनकी गर्दन पर तलवार का प्रहार कर दिया जिससे कुंवर चैन सिंह की गर्दन रण भूमि में ही गिर गई और उनका धड़ काफी देर तक लड़ता रहा

कुंवर चैन सिंह की धर्म पत्नी कुंवरानी राजावत जी ने उनकी याद में नरसिंहगड़ स्थित परशुराम सागर के पास एक मंदिर भी बनवाया जिसे कुंवरानी जी के मंदिर के नाम से जाना जाता है।

भारत जोड़ो आन्दोलन की महती भूमिका-नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार कुंवर चैन सिंह की स्मृति को अक्षुण बनाए रखने में भारत जोड़ो आन्दोलन के संस्थापक संयोजक डा. बलबीर तोमर और साथियों का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके बिना इस आयोजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस बार भी सोमवार को कुंवर चैन सिंह स्मारक पर संगठन के माध्यम से सुबह 10 बजे श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया किया गया है। सभी देशभक्त नागरिकों से श्री तोमर ने श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।*

संपादकीय

शुगर फ्री कैंसर

चीनी के विकल्प के रूप में जिस रासायनिक मिठास 'शुगर फ्री' का उपयोग तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियां करती रही हैं उनसे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले घातक प्रभावों को लेकर नये सिरे से बहस छिड़ गई है। कृत्रिम रूप से खाद्य पदार्थों को मीठा करने वाले एस्पार्टेम को कैंसर कारक के रूप में वर्गीकृत तो किया गया है, लेकिन इसके सेवन को लेकर निर्णायक चेतावनी जारी न किये जाने पर सवाल उठ रहे हैं। दरअसल, विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोषण व खाद्य सुरक्षा विभाग के तहत दो समूहों में हजारों वैज्ञानिकों के शोध अध्ययन सामने के बाद कृत्रिम मीठे को कैंसर के कारकों के रूप में वर्गीकृत किया गया था। ये निष्कर्ष सामने आना बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि दुनिया में भीमकाय कंपनियां कृत्रिम मीठे से बने उत्पादों का खरबों रुपये का कारोबार करती हैं। साथ ही दुनिया के तमाम इस तरह के शोधों को प्रभावित करने का भी दमखम रखती हैं। साथ ही महाशक्ति का राजाश्रय भी उनकी ताकत होती है। यही वजह है कि इस कृत्रिम मिठास को कैंसर कारक वर्ग में शामिल करने के बावजूद इस बाबत कोई निर्णायक दिशा–निर्देश नहीं आए कि इसका उपयोग न किया जाये। स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का एक वर्ग मानता है कि शुगर फ्री से कैंसर की आशंका को लेकर स्पष्ट चेतावनी सामने आनी चाहिए। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह जरूर कहा है कि लोग एस्पार्टेम वाले शुगर फ्री और डाइट खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें। दरअसल, अब तक धारणा रही है कि चीनी से दो सौ गुना अधिक मीठे व कम कैलोरी खपत वाले पदार्थ से शुगर के घातक प्रभावों से बचा जा सकता है। दरअसल, यह पदार्थ विश्व की नामी कंपनियों के शीतल पेय पदार्थों के अलावा च्यूइंग गम व टूथपेस्ट आदि हजारों खाद्य पदार्थों में मिलाया जाता है। बीती सदी के अस्सी के दशक में उपयोग में आई कृत्रिम मिठास इससे पहले ही विवादों में घिरी रही है, स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसके नुकसान के प्रति चेताते रहे हैं। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोषण और खाद्य सुरक्षा विभाग की पहल के बाद इन पदार्थों के सेहत पर दुष्प्रभाव पड़ने की आशंकाओं के यथार्थ को दुनिया के सामने रखा है। कुछ लोगों की दलील है कि सीमित मात्रा में कृत्रिम मिठास वाले पदार्थ लेने से समस्या नहीं होती है। दरअसल, समस्या इसके अधिक मात्रा में सेवन करने से पैदा होती है। लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन की कैंसर विशेषज्ञों की समिति अंतर्राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान संस्था के इसे संभावित कैंसर कारकों की सूची में वर्गीकृत करने के बाद उपभोक्ताओं की चिंता बढ़ी है। ऐसे में मांग की जा रही है कि इसके उपयोग की सुरक्षित मात्रा का नियामक संस्थाएं निर्धारण करें। कुछ लोगों का अब तक मानना रहा है कि हृदय व मधुमेह रोगों के विस्तार में भी इसकी भूमिका रही है। वहीं इसके उपयोग के पक्षधर बताते हैं कि वजन के हिसाब से इसका उपयोग सुरक्षित होता है। लेकिन सवाल ये है कि बड़ी मात्रा में बच्चों द्वारा इसका उपयोग करने से उपजी चिंताएं अलग हैं क्योंकि उनसे संयम की उम्मीद कैसे की जाये। चिंता इस बात की भी है कि बच्चों में बचपन से अधिक मीठा लेने की आदत बन सकती है। वह भी तब जब वैज्ञानिक निष्कर्ष बताते हैं कि कृत्रिम मिठास वजन कम करने में मददगार नहीं है। ऐसे में चिकित्सक सलाह देते हैं कि चाहे प्राकृतिक शुगर हो या कृत्रिम मिठास, दोनों के अधिक उपयोग से परहेज करना चाहिए। अतरू उत्पादक कंपनियां मीठे के स्थान पर स्वाद को प्राथमिकता दें। निस्संदेह, विकासशील देश, जहां बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पाद खपाने को आतुर रहती हैं, वहां सरकारों का भी दायित्व बनता है कि नागरिकों के स्वास्थ्य के मद्देनजर स्वतंत्र रूप से शोध–अनुसंधान के जरिये सच सामने लाएं। यह भी कि ये कृत्रिम पदार्थ किस सीमा तक लोगों के स्वास्थ्य के लिये नुकसानदायक नहीं होते हैं। इस मुद्दे पर देश में व्यापक बहस की जरूरत है। विगत में विश्व स्वास्थ्य संगठन भी उपभोक्ताओं से वजन नियंत्रण के लिये चीनी के अतिरिक्त अन्य मीठे पदार्थों के उपयोग में कमी लाने की सलाह दे चुका है।

न्यायपालिका का सन्देश

आदित्य नारायण

संविधान का शासन देखना न्यायपालिका का काम होता है क्योंकि हर राज्य की सरकार और उसके चुने हुए प्रतिनिधि संविधान की कसम उठा कर ही अपना काम शुरू करते हैं और भारतीय लोकतन्त्र में पुलिस भी संविधान से ही बन्धी होती है।

स्वतन्त्र भारत का इतिहास गवाह है कि जब–जब भी इस देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था की जनमूलक शासन प्रणाली को खतरा पैदा हुआ है, तब–तब इस देश की न्यायपालिका ने खड़े होकर संविधान का शासन स्थापित करने की पहल की है। केवल इमरजेंसी का 18 महीने का समय ऐसा जरूर कहा जा सकता है जब स्वयं न्यायपालिका मूक हो गई थी। इस अवधि को छोड़ कर न्यायपालिका में बैठे न्यायमूर्तियों ने संविधान को सर्वोपरि रखते हुए आम लोगों को उनके प्रजातान्त्रिक अधिकार देने में कभी कोई चूक नहीं की। बेशक कुछ अपवाद हो सकते हैं मगर सम्पूर्णता में यही कहा जायेगा कि न्यायपालिका ने लोकतन्त्र के आधार 'लोक' अर्थात लोगों के मान–सम्मान की रक्षा के लिए संविधान में दिये गये उनके अधिकारों की सर्वदा सुरक्षा की और तय किया कि लोगों द्वारा चुनी गई सरकारें सर्वप्रथम उन्ही के कल्याण व हित के लिए निर्णय करें और काम करें। मणिपुर के मामले में हम देख रहे हैं कि यहां की मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाओं का सर्वोच्च न्यायालय ने स्वतः संज्ञान लेते हुए सरकारों को चेतावनी दी कि वे आवश्यक कदम उठायें वरना मजबूर होकर उन्हें कार्रवाई करनी पड़ेगी। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी.वाई. चन्द्रचूड़ ने जिस तरह पूरे देश के लोगों को चेताया है कि मणिपुर जैसी घटनाएं किसी रूप में स्वीकार्य नहीं हो सकतीं उसी से इस राज्य के मुख्यमन्त्री एन. बीरेन सिंह को एहसास होना चाहिए था कि उन्होंने अपने राज्य के लोगों का मुखिया होने का हक खो दिया है और उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए था। मगर जिस आदमी की नाक के नीचे पुलिस के साये में मणिपुर में दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके लोगों की भीड़ ने पैदल घुमाया और उन्हें खेतों में खदेड़ कर जिस तरह एक युवा स्त्री के साथ सामूहिक बलात्कार किया, उसे यह मुख्यमन्त्री सामान्य कानून–व्यवस्था का मामला मान रहा है और अपने प्रदेश में अपने शासन के दौरान ही दो जनजातियों के आपसी गृहयुद्ध को होता देख रहा है उससे लगता है कि यह सारा काम उसकी सरकार के संरक्षण में ही हुआ। अब तो इस बारे में एक पक्का सबूत भी सामने आ गया है। जिन दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके घुमाया गया उनमें से कम वय की एक युवती ने एक राष्ट्रीय अंग्रेजी अखबार को बताया है कि भीड़ के हवाले उसे खुद पुलिस द्वारा ही किया गया। क्या इससे अधिक संवैधानिक व्यवस्था के समाप्त हो जाने का कोई और प्रमाण मिलेगा। संविधान का शासन देखना न्यायपालिका का काम होता है क्योंकि हर राज्य की सरकार और उसके चुने हुए प्रतिनिधि संविधान की कसम उठा कर ही अपना काम शुरू करते हैं और भारतीय लोकतन्त्र में पुलिस भी संविधान से ही बन्धी होती है। मगर क्या कयामत बरपा हो रही है कि मणिपुर में पुलिस थानों से ही हथियार लूटे जा रहे हैं और इनका प्रयोग प्रदेश की जनजातियों के समूह एक–दूसरे के खिलाफ कर रहे हैं। क्या हम इसे कानून–व्यवस्था की समस्या कहेंगे? मणिपुर की जनता के साथ यह सरासर अन्याय कहा जायेगा क्योंकि अपने संवैधानिक अधिकार का प्रयोग करते हुए अपने वोट की ताकत से राज्य में चुनी हुई सरकार स्थापित की थी। इस सरकार का काम राज्य की जनजातीय समस्या का हल करना था मगर इसने तो उल्टा इस समस्या को गृहयुद्ध जैसा बना दिया। क्या समाज के दो समुदायों को एक– दूसरे का जानी दुश्मन बना कर किसी राज्य में कानून का शासन स्थापित हो सकता है? आपसी दुश्मनी निकालने के लिए जिस तरह महिलाओं को लक्ष्य करके उनके साथ पैशाचिक कृत्य किया गया क्या उसे कोई भी सभ्य देश बर्दाश्त कर सकता है। हम अपने समाज को क्या बना रहे हैं ? राजनीति का पहला काम जनता को सभ्य बनाना होता है और सभ्यता भाईचारे को बढ़ावा देती है। लेकिन देखिये संसद में क्या हो रहा है? दो दिन बीत गये मगर मणिपुर जैसे भयावह मुद्दे पर चर्चा ही नहीं हो पा रही है और सत्ता व विपक्ष को संसद के दोनों सदनों के सभापतियों ने इस विषय पर उलझा रखा है कि चर्चा किस नियम के अन्तर्गत हो। राष्ट्र को झकझोर कर देने वाली घटना जब भारत के किसी भी भाग होती है तो विपक्ष का ही यह दायित्व बनता है कि वह सरकार को मजबूर करे कि वह उस विषय पर संसद में खुल कर चर्चा कराये। जब देश की सड़कों पर कोहराम मचा हुआ हो तो संसद कैसे चुप रह सकती है क्योंकि वह इसी देश के 140 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व उनके चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से करती है। मगर दोनों सदनों बैठते हैं और स्थागित हो जाते हैं। इससे

2 नियमों के बीच अटकी संसद में मणिपुर की चर्चा

अभिनय आकाश

मणिपुर की स्थिति को लेकर चर्चा के फॉर्मेट को लेकर सरकार और विपक्ष के बीच ठन गई है। इसके कारण संसद के मानसून सत्र का पहला दिन बाधित हुआ। इस दौरान रूल 176 और रूल 267 का जिक्र आया। एक तरफ सरकार जहां छोटी अवधि की चर्चा के लिए सहमत हुई थी। वहीं, विपक्ष ने जोर देकर कहा कि प्रधानमंत्री नियम 267 के तहत सभी मुद्दों को निलंबित कर चर्चा के बाद स्वतरू संज्ञान लें। आखिर क्ध्या है नियम 267 जिसकी मांग विपक्ष ने मणध्पिुर मुद्दे पर चर्चा के लध्ए की है? दूसरी तरफ रूल 176 क्ध्या है जिसके तहत सरकार छोटी अवधि की चर्चा के लिए तैयार है? दरअसल, 1952 में लोकसभा और राज्यसभा ने अपने–अपने प्रक्रिया नियम प्रकाशित किये। इन

नियमों में यह विवरण दिया गया कि दोनों सदन कैसे कार्य करेंगे। उन्होंने विभिन्न प्रक्रियात्मक तंत्रों को भी निर्दिष्ट किया जिसके द्वारा संसद सदस्य (सांसद) दो विधायी सदनों के कामकाज में भाग ले सकते हैं। पिछले सात दशकों में ये नियम बदल गए हैं, लेकिन बुनियादी सिद्धांत अपरिवर्तित हैं। सदन में मामले उठाने के लिए सांसदों को पीठासीन अधिकारियों (राज्यसभा के सभापति और लोकसभा अध्यक्ष) को पहले से सूचित करना होगा। यह आवश्यकता सुनिश्चित करती है कि सरकार सांसदों को जवाब देने के लिए जानकारी एकत्र कर सकती है। सरकार के पास विधेयकों और बजटों का भी अपना एजेंडा है। इसमें भी पहले से जानकारी देना जरूरी है ताकि सांसद बहस के लिए खुद को तैयार कर सकें। प्रत्येक सदन का सचिवालय सरकार और व्यक्तिगत सांसदों के नोटिस को संसद में एक दिन के कामकाज की सूची में संकलित करता है। और सांसद केवल उस मामले पर चर्चा कर सकते हैं जो दिन के कामकाज पर है।

कार्यवाही स्थगित करने की मांग

लेकिन निर्धारित कार्य को ष्थगन प्रस्तावष नामक एक प्रक्रियात्मक तंत्र द्वारा अलग रखा जा सकता है। लोकसभा में यह नियम एक सांसद को अत्यावश्यक सार्वजनिक महत्व के एक निश्चित मामले पर चर्चा करने के लिए अध्यक्ष से सदन की कार्यवाही स्थगित करने का आग्रह करने की अनुमति देता है। स्पीकर को यह तय करना होगा कि सांसद को प्रस्ताव पेश करने की अनुमति दी जाए या नहीं। इसके परिणामस्वरूप सदन ने इस अत्यावश्यक मामले पर चर्चा करने के लिए कार्य की अपनी निर्धारित सूची को रद्द कर दिया। स्थगन प्रस्ताव एक प्रकार से सरकार की निंदा है। इसकी उत्पत्ति यूनाइटेड किंगडम में हाउस ऑफ कॉमन्स में हुई, और भारत में इसकी यात्रा 1919 के भारत सरकार अधिनियम के तहत स्थापित पूर्व–स्वतंत्र द्विसदनीय विधायिका के नियमों के तहत शुरू हुई। केंद्रीय विधानसभा और विधान परिषद के सदस्य अपने सदनों में स्थगन प्रस्ताव पेश कर सकते थे। इन सदनों के पीठासीन अधिकारियों ने स्थगन प्रस्तावों की अनुमति दी क्योंकि सदस्यों के पास जरूरी मामलों को उठाने के लिए अन्य प्रक्रियात्मक उपकरण नहीं थे। और चूंकि ब्रिटिश प्रशासन विधायिका के नियंत्रण में नहीं था, इसलिए यह सदस्यों के लिए किसी विशेष गंभीर मामले पर अपनी चिंता व्यक्त करने के कुछ प्रक्रियात्मक उपायों में से एक था।

क्यों खास है रूल 267

संसदीय रिकॉर्ड बताते हैं कि साल 1990 से 2016 के बीच 11 बार ऐसे मौके आए जब अलग–अलग चर्चाओं के लिए इस नियम का इस्तेमाल किया गया। सांसदों के लिए जरूरी मामलों को उठाने के लिए नियम पुस्तिका में अन्य प्रक्रियात्मक उपकरणों की उपलब्धता को देखते हुए, लोकसभा अध्यक्ष स्थगन प्रस्तावों की अनुमति देने में अनिच्छुक रहे हैं। अधिकांश लोकसभाओं ने स्थगन प्रस्तावों पर अपना 3ः से भी कम समय खर्च किया है। एकमात्र अपवाद 9वीं लोकसभा (1989–91, अध्यक्ष रबी रे) थी जिसने अपना लगभग 5प्रतिशत (36 घंटे) समय इस पर खर्च किया। रूल 267 सासंदों के लिए सरकार से सवाल पूछने और प्रतिक्रिया मांगने का एकमात्र तरीका नहीं है। वे प्रश्नकाल के दौरान किसी भी मुद्दे से संबंधित प्रश्न पूछ सकते हैं। जिसमें संबंधित मंत्री को मौखिक या लिखित में उत्तर देना होता है। कोई भी सांसद शून्यकाल के दौरान इस मुद्दे को उठा सकता है। हर दिन 15 सांसदों को शून्यकाल में अपनी पसंद के मुद्दे उठाने की अनुमति होती है। कोई सांसद इसे विशेष उल्लेख के दौरान भी उठा सकता है। एक अध्यक्ष प्रतिदिन 7 विशेष उल्लेखों की अनुमति दे सकता है।

राज्यसभा में विकल्प

जैसा कि पहले चर्चा की गई है, राज्यसभा नियम पुस्तिका स्थगन प्रस्ताव का प्रावधान नहीं करती है। वर्षों से, राज्यसभा सांसद जरूरी मामलों को उठाने के लिए सदन में प्रश्नकाल को निलंबित करने के लिए नियम 267 का इस्तेमाल करते रहे हैं। 1952 में इस नियम में कहा गया कि कोई भी सदस्य, अध्यक्ष की सहमति से, यह प्रस्ताव कर सकता है कि परिषद के समक्ष किसी विशेष प्रस्ताव पर लागू होने पर किसी भी नियम को निलंबित किया जा सकता है और यदि प्रस्ताव पारित हो जाता है तो विचाराधीन नियम को कुछ समय के लिए निलंबित कर दिया जाएगा।

मेष :– कुछ अच्छे आसारों से मन प्रफुल्लित रहेगा। रोजगार संबंधी यात्रा में अवरोध संभव। शिक्षार्थियों के लिए विशेष लाभ के आसार है। शिक्षा क्षेत्र में जुड़े सभी छात्रों को परिश्रम करने की आवश्यकता है।

बृषभ :– स्वयं पर भरोसा कर योजनाओं को सुचारु रूप से क्रियान्वित करें। संबंधों में सरल व व्यवहारिक बनने की कोशिश करें। आर्थिक चिंता संभव। शिक्षार्थियों के लिए विशेष लाभ के आसार हैं।

मिथुन :– किसी महत्वपूर्ण कार्य में अवरोध मन को हतोत्साहित करेगा। संबंधों के प्रति नयी शिकायतें संभव। किसी विद्वान के विचारों से प्रभावित मन मे उत्साह का संचार होगा।

कर्क :– कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा–प्रतियोगिता के दिशा में प्ररिश्रम तीव्र होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

सिंह :– किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। आवेश में लिये गये निर्णय से पश्चाताप संभव। शिक्षा–प्रतियोगिता की दिशा में प्ररिश्रम तीव्र होगा।

कन्या :– समस्याओं के समाधान हेतु मन नए युक्तियों पर केन्द्रित होगा। महत्वपूर्ण कायरे के प्रति आलस्य न करें। छोटी–छोटी बातों पर क्रोधित न हो। शिक्षा–प्रतियोगिता के दिशा में प्ररिश्रम तीव्र होगा।

तुला :– मन सकारात्मक विचारों से प्रभावित होगा। नाजुक संबंधों में सन्तुलित व मधुर वाणी का प्रयोग करें। कोई आपका अपना बिगड़े हुए सम्बन्धों मे सुधार कराएगा।

वृश्चिक :– सभी प्रकार के दायित्वों की पूर्ति हेतु सन्तुलित योजना पर चलें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय में संबंधों का सहयोग प्राप्त होगा। विरोधियों की प्रबलता से कठिनाइयां संभव।

धनु :– नए समीकरण लाभकारी कार्य क्षमता के परिचायक होंगे। प्रणय सम्बनध मे प्रगाढ़ता बढ़ेगी। आय–व्यय मे सन्तुलन बनने का प्रयत्न करें। आलस्य का त्याग करें।

मकर :– कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा–प्रतियोगिता के दिशा में प्ररिश्रम तीव्र होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

कुंभ :– पुरानी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर आप उत्साहित होंगे। नियोजित कार्यकुशलता प्रगति के लिए आशान्वित होंगे। सुखद कायरे की व्यस्तता रहेगी।

मीन :– क्षमता से परे किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना हानिकार हो सकती है। विद्यार्थी शिक्षा मे लापरवाही ना करें। रोजगार में नए लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। जीवन साथी का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

जल प्रलय और भूकंप के झटके मानवीय अति का परिणाम

संजीव ठाकुर

आजादी हमें मिली है यानी कि मानव को परंतु प्रकृति आजादी से अछूती रही है। अमूमन हमारी जरूरत रोटी, कपड़ा, मकान और जल की थी कि हमको उद्योग धंधे का विकास तीव्र गति से करना पड़ा।

जल के भयानक रौद्र रूप से देश के कई राज्यों को मुसीबत में डाल दिया है। दिल्ली ,गुजरात ,महाराष्ट्र, उत्तरांचल, और उत्तराखंड में मानव अपनी जान बचाने को तरस गया है। जन संख्या में बेतहाशा वृद्धि और जमीन में मकानों के बेतरतीब, अनियंत्रित निर्माण ने ऐसी स्थिति पैदा की हैस शहरों में ड्रेनेज सिस्टम बरसों पुराने हैं और अब लगभग असफल हो चुके जिसके फल स्वरूप जल का बहाव अनियंत्रित होकर शहरों के लिए विभीषिका बनकर टूट पड़ा है।देश में लगभग बाढ़ के प्रकोप से 200 जीवन काल कवलित हो गए हैं। हमें कब समझ में आएगा और हम कब अपनी इन हरकतों से बाज आएंगे। ग्लोबल वार्मिंग तथा अप्राकृतिक उष्णता के अनेक प्रभाव अब धरती, नदियां पहाड़, पेड़ एवं मानव जाति पर बेहद चिंताजनक रूप में दिखाई देने वाला है और निसंदेह यह प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी तथा अप्राकृतिक दोहन के फल स्वरुप होने वाला हैस जब हम अपने विकास का इतिहास देखते हैं तो ब्रिटिश सत्ता के दौरान हमारे संसाधनों का प्रकृति का अंधाधुंध दोहन होता रहा है। आजादी हमें मिली है यानी कि मानव को परंतु प्रकृति आजादी से अछूती रही है। अमूमन हमारी जरूरत रोटी, कपड़ा, मकान और जल की थी कि हमको उद्योग धंधे का विकास तीव्र गति से करना पड़ा। मशीनें जितनी बड़ी से बड़ी होती गई आदमी उतना ही बौना होता गया। कृषि में नई नई तकनीक ट्रैक्टर, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि बंजर होकर कराहाने लगी। विकास का सही मायने माननीय शक्तियों के साथ ऊर्जा और उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य का सही उपयोग ही होगा। जब से हमने विकास के पथ पर उड़ान भरी है उद्योगों की चिमनी यों को ऊपर उठाया मोबाइल क्रांति का बटन दबाया ई–मेल पर सवार होकर विश्व संदेश को सुना तब से हमारे झरनों का कल कल स्वर और संगीत बंद हो गया, पक्षियों का कलरव बंद हो गया पक्षी अब चीत्कार कर रहे हैं। नदी नाले सूखकर मृतप्राय हो गए हैं। समुद्र की लहरों की झंकार विलुप्त हो गई है और पानी खारा और खारा हो गया है। अब हमें यह सोचना है कि विकास के नाम पर हमें ग्रीन इंडिया चाहिए या इंटरनेट की सवारी कर डिजिटल इंडिया चाहिए। बच्चों की झोली में इंटरनेट को डालकर डिजिटल जेनरेशन का सपना देखना चाहिए या प्रकृति की गोद में सुगंधित वायु की लहरों में खो जाना चाहिए। झरनों में बैठकर नौका विहार का आनंद लेना चाहिए या कंप्यूटर में बैठकर नेट खोल कर नन्हे मुन्ने की आंखों पर जोर डालकर उन्हें चश्मा वाला बनाना चाहिए। हरा भरा हिंदुस्तान यानी कि ग्रीन इंडिया और डिजिटल इंडिया का सपना नदी के दो कभी ना मिलने वाले किनारे हैं। विकास के नाम पर असीमित उद्योग धंधों की बाढ़ आ गई है। भूमि समाप्त हो रही है साथ ही हमारी वायु विषैली हो गई है। रात में शहरी मकानों मैं बिजली के झालरों के सामने आकाश में रात्रि के तारों की चमक फीकी पड़ गई है। जंगलों को हम ऐसे साफ करते गए जैसे सड़क पर रोड रोलर चला रहे हैं। नगर बने ,महानगर बने ,मकान बने किंतु अब घर गायब होते गए, हमें तब सुध आई जब चिड़िया चुग गई खेत, हमें विकास के नाम पर मानव सभ्यता से जुड़ी जमीन पानी, हरियाली,पक्षी जानवर सब चाहिए केवल अंधाधुन्ध कंक्रीट का विकास या इंटरनेट की रफ्तार नहीं चाहिए। इसके लिए हमें संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। संसाधनों का इस्तेमाल अतिरेक में नहीं होना चाहिए। महात्मा गांधी ने खुद कहा है कि पृथ्वी पर सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन है, किंतु मानव की लालच को पूरा करने का कोई साधन नहीं है। हम प्राकृतिक परियोजना तथा परिस्थितिकी की परियोजनाओं का स्वागत करना होगा सम्मान करना होगा। हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौर, पवन, बायोगैस, ज्वार तरंग लहरों को ऊर्जा का आधार बनाना होगा। भारत में परिस्थितियां बड़ी विषम है एक तरफ सोडियम लाइट से नहाती दिल्ली ,मुंबई ,बेंगलुरु की रंगीन सड़कें हैं, ऊंची ऊंची इमारतें हैं, तेज गति की मेट्रो है,वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का लुफ्त उठाते हुए युवक युवतियां है, दूसरी तरफ पसीने से भीगा हुआ किसान हैं। कैरोसिन की चिमनी में बच्चों को कहानी सुनाती माताएं हैं। यानी कि इतनी डिजिटल विषम बताएं भारत के अलावा विश्व के किसी भी कोने में नहीं है। भारत में विकास के नाम पर डिजिटलाइजेशन करने की आवश्यकता जरूर है पर गांव जंगलों नदियों और प्राकृतिक संसाधनों के निरस्तीकरण और विनाश की कीमत पर नहीं। हमें यह साबित करना होगा कि भारत के विकास की हरित क्रांति के साथ–साथ डिजिटल इंडिया भी विकास की गति को बढ़ा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत कि हरित क्रांति का विकास ही डिजिटल इंडिया का स्वप्न को भी पूरा करेगा। इसके लिए स्वच्छ साफ–सुथरे संसाधन जैसे जल, खनिज, यूरेनियम ,थोरियम नहीं होगा तब तक नाभिकीय रिएक्टर की भट्टीयां कैसे चलेंगी।

अहमदनगर जिले में हथियारों का बड़ा जखीरा बरामद, एक गिरफ्तार

मुंबई। अहमदनगर जिले के खरे करजुले गांव में पुलिस ने छापा मारकर बड़ी मात्रा में हथियारों का जखीरा बरामद किया है, जिसमें 12 बम, 25 किलो गोला-बारूद और 25 पिस्तौल की गोलियां शामिल हैं। इस मामले में पुलिस ने दिनकर शेलके को गिरफ्तार किया है । पुलिस के अनुसार एमआईडीसी पुलिस स्टेशन की टीम को खरे करजुले गांव के एक व्यक्ति के घर में भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार रखे जाने की गोपनीय जानकारी मिली थी। इसी जानकारी के आधार पर रात में पुलिस ने छापा मारा और संबंधित घर से भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक बरामद किया है। इस मामले में पुलिस ने तत्काल आरोपित दिनकर शेलके को गिरफ्तार किया और उस पर विस्फोटक सामग्री और हथियार रखने का मामला दर्ज किया है।

कृषि मंत्रालय ने तीन महत्वपूर्ण पहलों को किसानों को किया समर्पित

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) में किसानों को और अधिक सहूलियत देते हुए सटीक उपज अनुमान एवं पंजीकरण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए केंद्रीय कृषि एवं

किसान कल्याण मंत्रालय ने तीन महत्वपूर्ण पहलों- येस्टेक (प्रौद्योगिकी पर आधारित उपज अनुमान प्रणाली), विंड्स (मौसम सूचना डेटा सूचना प्रणाली) और एआईडीई (मध्यस्थ नामांकन के लिए ऐप) को किसानों को समर्पित किया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री किरेन रिजिजू विशेष रूप से उपस्थित थे। इस मौके पर केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय के तहत, राज्यांश लंबित होने से किसानों को क्लेम मिलने में होने वाली कठिनाइयों से राहत प्रदान करते हुए आठ राज्यों के लगभग 5.60 लाख लाभार्थी किसानों को अपने स्तर पर 258 करोड़ रु. बतौर क्लेम जारी किए। इनमें गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम, ओडिशा व आंध्र प्रदेश के किसान शामिल हैं।

देश के 13 करोड़ घरों में पहुंचा नल से जल : शेखावत

नई दिल्ली। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा है कि देश में 12.6 करोड़ से अधिक घरों को नल से जल की सुविधा उपलब्ध कराई गई है और 64 प्रतिशत से अधिक गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किये गये हैं।

श्री शेखावत ने रूरल वाश पार्टनर्स फोरम-आरडब्ल्यूपीएफ के गठन की पहली वर्षगांठ पर यहां आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आरडब्ल्यूपीएफ के इस समारोह के माध्यम से स्वच्छ सुजल भारत की दिशा में प्रगति में तेजी लोने का काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आरडब्ल्यूपीएफ भारत के ग्रामीण वॉश क्षेत्र में काम करने वाला संगठन है जो पेयजल और स्वच्छता विभाग के लिए काम कर रहा है। इस फोरम का मुख्य उद्देश्य जल जीवन मिशन और स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण को शीघ्रता से आगे बढाना है। इस फोरम के माध्यम से ग्रामीण वॉश क्षेत्र में काम करने वाले सभी संगठनों को एक सामूहिक मंच प्रदान करने का काम किया गया है। उन्होंने कहा, सरकार द्वारा नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री का जी 20 ऊर्जा मंत्रियों को संदेश, सबसे अधिक आबादी के बावजूद भारत जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए प्रतिबद्ध

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। बावजूद इसके भारत जलवायु परिवर्तन पर प्रतिबद्धता की दिशा में समर्पित प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री ने यह संदेश जी 20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक में दिया।

प्रधानमंत्री ने अपने वीडियो में कहा- भारत हरित विकास और ऊर्जा बदलाव की दिशा में प्रयास कर रहा है।जलवायु परिवर्तन रोकने की दिशा में वैश्विक प्रयासों के हिस्से के तौर पर भारत ने पहले ही कई लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं। भारत आज सौर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व कर रहा है। भारत गैर जीवाश्म आधारित ऊर्जा उत्पादन क्षमता को 2030 तक अपनी ऊर्जा जरूरत के हिसाब से 50 प्रतिशत तक ले जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने सबके लिए स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करने में भारत के प्रयासों का उल्लेख किया।उन्होंने कहा कि लचीली, समानता पूर्ण एवं सतत ऊर्जा सभी को मुहैया कराने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। 2015 में एक हमने एलईडी लाइट वितरण का दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम शुरू किया था। भारत ने 19 करोड़ परिवारों को नौ साल में एलपीजी से जोड़ा है। हमने सभी गांवों को बिजली पहुंचाने का बड़ा लक्ष्य हासिल किया है।

प्रधानमंत्री ने रोजगार मेले में 70 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 70,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने इन युवाओं को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि 1947 में आज के ही दिन 22 जुलाई को तिरंगे को संविधान सभा द्वारा वर्तमान स्वरूप में स्वीकार किया गया था। इस महत्वपूर्ण दिन है। आप सभी को सरकारी सेवा के लिए नियुक्ति पत्र मिलना बहुत बड़ी प्रेरणा है। यह आपके लिए यादगार और देश के लिए ऐतिहासिक दिन है।उन्होंने कहा कि आजादी के इस अमृतकाल में सभी देशवासियों ने अगले 25 वर्ष में भारत को विकसित बनाने का संकल्प लिया है। देश के सभी नागरिक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हर सरकारी कर्मचारी के लिए यह समय महत्वपूर्ण है। आपके फैसले और निर्णय देशहित में विकास को गति देने वाले होने चाहिए। आपको इस अमृतकाल में देश सेवा का बहुत बड़ा अवसर मिला है।

रोजगार मेला देश भर में 44 स्थानों पर आयोजित किया गया। इस पहल का समर्थन करने वाले केंद्र सरकार के विभागों के साथ-साथ राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों में भर्तियां हो रही हैं। देशभर से चुने गए नए कर्मचारी राजस्व विभाग, वित्तीय सेवा विभाग, डाक विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, रक्षा मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, जल संसाधन विभाग, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग और गृह मंत्रालय सहित सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में नियुक्त किए जाएंगे।

मोदी तीसरी बार बनेंगे प्रधानमंत्री, विपक्ष के पास कोई विकल्प नहीं : शान्ता कुमार

शिमला। पूर्व केन्द्रीय मंत्री शान्ता कुमार ने कहा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव की दृष्टि से पिछले दिनों बेंगलुरु और दिल्ली की बैठकों की बहुत चर्चा हुई। सच्चाई यह है कि बेंगलुरु में 26 राजनैतिक दलों के 30 नेता थे, तय कुछ भी नहीं हुआ, न संयोजक, न नेता, केवल अगली बैठक की तरीख तय कर सके, परंतु दिल्ली में 38 राजनैतिक दल मिले, नेता एक था सब कुछ तय हो गया। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास कोई विकल्प नहीं है। केंद्र में एक बार फिर से भाजपा की सरकार बनेगी और तीसरी बार नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनेंगे।

शान्ता कुमार ने शनिवार को एक बयान में कहा कि भारत के राजनीतिक इतिहास में केवल एक बार अटल बिहारी वाजपेयी ने 22 दलों को मिलाकर एनडीए बनाया। न्यूनतम साझा कार्यक्रम स्वीकार किया। चुनाव लड़ा, चुनाव जीता और पांच साल तक शानदार

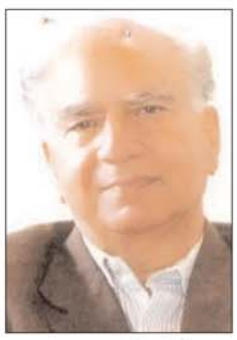

सरकार चला कर दिखाई। ऐसा न पहले कभी हुआ था, न भविष्य में होने की आशा है। आज देश की राजनीति में कहीं कोई अटल नहीं दिखाई देता। उन्होंने कहा भारत की राजनीति की सच्चाई यह है कि भाजपा और विशेषकर नरेन्द्र मोदी का दूर-दूर तक कोई भी विकल्प नहीं है। विश्वभर में मोदी के कारण भारत को एक नई पहचान मिली है, एक नया सम्मान मिला है।

उन्होंने कहा कि चुनाव का असली गणित यह है कि पार्टी के प्रतिबद्ध मतदाता सरकार नहीं बनाते। पार्टियों के प्रतिबद्ध मतदाता हर हाल में अपनी अपनी पार्टी को ही वोट देते हैं। परन्तु लगभग 20 प्रतिशत पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी जिनका किसी पार्टी से कोई संबंध नहीं होता, वे मतदाता अंतिम समय में जिस पार्टी को वोट देते हैं उसी से उस पार्टी की सरकार बनती है।

कांग्रेस पूरे मणिपुर को कलंकित कर रही : सीएम डॉ हिमंत

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने मणिपुर में एक महिला के साथ हुए दुर्भाग्यपूर्ण बलात्कार की घटना को लेकर कांग्रेस द्वारा मणिपुर को कलंकित किए जाने के प्रयास की कड़े शब्दों में निंदा की है।

मुख्यमंत्री ने शाम राजधानी दिसपुर जनता भवन स्थित अपने कार्यालय सभाकक्ष में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि देश के अन्य राज्यों की तुलना में पूर्वोत्तर राज्यों- खासकर मणिपुर, नगालैंड, मेघालय आदि में बलात्कार की घटनाएं काफी कम होती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मणिपुर में हुए इस जघन्य अपराध की घटना में शामिल लोगों के खिलाफ शीघ्र ही सरकार चार्जशीट दाखिल कर दोषियों को न्यायालय से कठोर दंड दिलाएगी।

डॉ सरमा ने कहा कि मणिपुर के मुख्यमंत्री ने इस मामले पर कड़ा रुख अख्तियार करते हुए कड़े आदेश दिये हैं जिसके चलते दोषियों को पकड़ा गया है।

मुख्यमंत्री डॉ सरमा ने कहा कि यह घटना दो माह पहले घटित हुई लेकिन आज लोकसभा अधिवेशन के मौके पर इसके वीडियो को वायरल किया गया है जिसके पीछे एक गहरी राजनीतिक साजिश की बू आती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस शासित राज्यों- राजस्थान, छत्तीसगढ़ या तृणमूल कांग्रेस शासित पश्चिम बंगाल में भी बलात्कार की घटनाएं घटित होती है। लेकिन, इन घटनाओं को उन राज्यों से जोड़ा नहीं जाता है। घटनाएं सभी जगह होती हैं। मुख्यमंत्री डॉ सरमा ने कहा कि चाहे बलात्कारी कहीं का भी क्यों न हो, वह बचना नहीं चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को पूर्वोत्तर के एक प्रमुख हिस्से मणिपुर राज्य को कलंकित करने के लिए माफी मांगनी चाहिए।

संघ स्थान पर हिन्दुस्थान खड़ा होता दिखाई दे, इसके लिए प्रतिदिन शाखा जाना आवश्यक : डॉ. मोहन भागवत

वाराणसी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ मोहनराव भागवत ने स्वयंसेवकों से कहा कि संघ स्थान पर हिन्दुस्थान खड़ा होता दिखाई दे, इसके लिए प्रतिदिन शाखा जाना आवश्यक है। यह बातें वह काशी प्रवास के दौरान ब्रह्माघाट स्थित धन-धानेश्वर शाखा पर स्वयंसेवकों के बीच कही। वह शुक्रवार की शाम काशी की पहली संघ शाखा पर पहुंचे थे। संघ प्रमुख डॉ भागवत ध्वज प्रणाम के बाद बाल और युवा स्वयंसेवकों से सीधे रूबरू हुए। लगभग आधे घंटे के ठहराव में संघ प्रमुख ने स्वयंसेवकों का परिचय पूछा और नियमित शाखा में आने के लिए उन्हें खास तौर पर प्रेरित किया।

इस दौरान उन्होंने स्वयंसेवकों

से संवाद करते हुए कहा कि संघ स्थान पर हिन्दुस्थान खड़ा होता दिखाई दे, इसके लिए प्रतिदिन शाखा आना आवश्यक है। उन्होंने स्वयंसेवकों को शाखा का महत्व समझाते हुए कहा कि शाखा में आदत और मजबूरी से नहीं भाव से आना है। उन्होंने कहा कि बाहरी दुनिया के चकाचौंध से हम अंदर का तत्व भूल जाते हैं। शाखा में आने से हम आत्मा और भारत के मूल तत्व से जुड़ते हैं।

भाव और श्रद्धाभाव से नियमित भारत माता की पूजा करनी चाहिए

उन्होंने कहा कि जैसे भगवान की पूजा करते हैं,उसी भाव और श्रद्धाभाव से भारत माता की नियमित पूजा करनी चाहिए। इससे सुंदर भारत खड़ा होगा और विश्वगुरू भी बनेगा। उन्होंने प्रचारकों को संदेश देते हुए कहा कि शाखाओं को अन्य शाखाओं का जन्मदाता होना चाहिए। काशी की पहली शाखा में आने पर आह्लादित संघ प्रमुख ने कहा कि नागपुर की पहली शाखा से यहां आकर अच्छा लगा। संघ प्रमुख को अपने बीच पाकर भावविभोर स्वयंसेवकों से संघ प्रमुख ने यहां दोबारा आने की बात भी कही।

जम्मू-कश्मीर के डोडा में फटा बादल, थलीला-चिराला लिंक रोड का एक हिस्सा बहा

डोडा। जम्मू संभाग के डोडा जिले के कोटा नाले में शनिवार सुबह बादल फटने से थलीला-चिराला लिंक रोड का एक हिस्सा बह गया और बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो गई।सब डिविजनल मजिस्ट्रेट थाथरी अतहर अमीन जरगर ने बताया कि तड़के बादल फटने के बाद थलीला-चिराला लिंक की सड़क का एक हिस्सा बह गया है। भारी बारिश के साथ बादल फटने से कोटा नाले में भूस्खलन और बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो गई है। हालांकि, किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। सड़क से मलबा हटाने और इसे जल्द से जल्द बहाल करने के लिए कर्मचारियों और मशीनरी को तैनात किया गया है।उन्होंने कहा कि राजमार्ग का डोडा-किश्तवाड़ खंड (शिव पुल और थाथरी पेट्रोल पंप के बीच) बादल फटने के कारण बंद हो गया था, जिसे दोतरफा यातायात के लिए बहाल कर दिया गया है। इस बीच डोडा और किश्तवाड़ जिलों के अधिकांश हिस्सों में शनिवार को तीसरे दिन भी मूसलाधार बारिश जारी रही है, जिसके परिणामस्वरूप चिनाब नदी, नीरू और कलनई जैसी उसकी प्रमुख सहायक नदियों में जल स्तर बढ़ गया है।जिला प्रशासन ने लोगों को सतर्क रहने और नदियों, नालों और अन्य संवेदनशील स्थानों से दूर रहने की सलाह दी है।

सहकारिता आंदोलन के लिए पैक्स को मजबूत बनाने की जरूरतः शाह

नई दिल्ली। गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहकारिता की सबसे छोटी इकाई पैक्स को मजबूत बनाने पर जोर देते हुए कहा कि इससे ही सहकारिता को गांव स्तर पर सुदृढ़ किया जा सकता है । श्री शाह ने प्राथमिक कृषि ऋण समितियों पैक्स द्वारा कॉमन सर्विस सेंटर सी एस सी की सेवाएं शुरू करने पर एक राष्ट्रीय महासंगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि पैक्स और सी एस सी के जुड़ने से सहकारिता को मजबूत करने व डिजिटल इंडिया को बढ़ावा देने के दो संकल्प एक साथ पूरे हो रहे हैं।उन्होंने कहा कि अगर सहकारिता आंदोलन को मज़बूत बनाना है तो इसकी सबसे छोटी इकाई पैक्स को मज़बूत बनाना होगा। श्री शाह ने कहा कि जब तक यह मज़बूत नहीं होते सहकारिता आंदोलन खड़ा नहीं हो

सकता। इसलिए सरकार ने यह तय किया है कि पैक्स का कम्प्यूटरीकरण कर उन्हें पारदर्शी बनाया जाए, जवाबदेही सुनिश्चित की जाए और साथ ही उनका आधुनिकीकरण किया जाए ताकि सरकार की डिजिटाइज्ड योजनाओं को पैक्स के साथ जोड़ा जा सके। श्री शाह ने कहा कि सहकारिता मंत्रालय के गठन के 20 दिन के भीतर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पैक्स के कंप्यूटरीकरण के लिए 2,500 करोड़ रुपये प्रदान किए जिससे 65,000 पैक्स का कंप्यूटरीकरण हो रहा है। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने कहा कहा कि न्यूनतम गवर्नमेंट,अधिकतम गवर्नेंस के साथ अंतिम व्यक्ति तक भ्रष्टाचार रहित डिलीवरी के सूत्र को चरितार्थ करने का सी एस सी से बड़ा कोई और साधन नहीं हो सकता। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की 300 से अधिक छोटी छोटी लाभार्थी योजनाओं को सी एस सी के साथ जोड़ दिया गया है। श्री शाह ने कहा कि इसकी पहुँच गाँव के गरीब से गरीब लोगों, भूमिहीन खेत मज़दूरों और दलित व आदिवासी समुदायों तक पहुँचाने के लिए पैक्स से बड़ा जरिया और कोई नहीं हो सकता।

अमरनाथ यात्राः जम्मू आधार शिवर से 3,472 तीर्थयात्रियों का जत्था रवाना

जम्मू। जम्मू कश्मीर के भगवती नगर आधार शिविर से 'बम बम भोले' का जयकारा करते हुए 3,472 तीर्थयात्रियों का एक नया जत्था शनिवार को दक्षिण कश्मीर हिमालय में स्थित पवित्र श्री अमरनाथ गुफा के दर्शन के लिए रवाना हुआ। एक अधिकारी ने बताया कि 3,472 तीर्थयात्री 132 वाहनों के काफिले में आधार शिविर से रवाना हुए। उन्होंने बताया कि 2515 तीर्थयात्रियों के समूह में 2042 पुरुष, 395 महिलाएं, 12 बच्चे, 63 साधु और तीन साध्वियां शामिल है जो 93 वाहनों के काफिले में पहलगाम के लिए रवाना हुए। इसी तरह बालटाल के लिए 957 श्रद्धालु रवाना हुए जिनमें 689 पुरुष और 268 महिलाएं शामिल है। सभी श्रद्धालु कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच 39 वाहनों के काफिले में रवाना हुए। गौरतलब है बाबा बर्फानी के पवित्र गुफा के दर्शन के लिए वार्षिक यात्रा एक जुलाई को शुरू हुई और यह 31 अगस्त को समाप्त होगी।

इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर का जताया आभार

मुंबई। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में वेब सीरीज के लिए पुरस्कार ससमय शामिल करने और साहसिक निर्णय लेने के लिए इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अभय सिन्हा ने भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर का आभार व्यक्त किया है। अभय सिन्हा ने अनुराग सिंह ठाकुर का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि हम वाकई इस फैसले की सराहना करते हैं क्योंकि आज की तारीख और समय में वेब सीरीज लाखों लोगों से जुड़ने का नया माध्यम बन गई है। आपका निर्णय वास्तव में सराहनीय है और हम आपके कार्यकाल के दौरान आपके द्वारा लाए जाने वाले ऐसे नवीन सुधारों की आशा करते हैं और मनोरंजन उद्योग से जुड़े सभी मामलों में अपना पूर्ण समर्थन और सहयोग व्यक्त करते हैं।

सीएम योगी ने बिजनौर को दी 435 करोड़ की सौगात, बोले- विदुर कुटी से होकर गुजरेगी गंगा की धारा

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को बिजनौर दौरे पहुंचे। सीएम योगी पहले नदी किनारे कल्प वृक्ष पौधा लगाया। इसके बाद सीएम योगी ने सभा को संबोधित किया। इस दौरान सीएम योगी ने राजनीति व सरकार की उपलब्धियों पर कोई बात नहीं की। उन्होंने केवल विकास पर ही फोकस रखा।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विदुर कुटी में राजकीय संस्कृत इंटर कॉलेज की भूमि का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा बिजनौर में विदुर कुटी से ही गंगा की धारा होकर गुजरेगी। सीएम योगी ने कहा कि बिजनौर से ही संस्कृत और संस्कृति की धारा फूटेगी। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि यहां का इतिहास पांच हजार साल पुराना है। कहा कि भगवान कृष्ण भी यहां आए थे और उन्होंने यहां पर सरसों का साग खाया था। बता दें कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को जिले में 435 करोड़ रुपये की परियोजना का शिलान्यास किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम को लेकर विदुर कुटी मंदिर

सहित आसपास के क्षेत्र को केसरिया रंग से सजाया गया है। सड़क के दोनों और पेड़ में फूलवारी लगाई गई है। वहीं, जनसभा के पंडाल में 10 हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है।

आज बंद है बिजनौर चांदपुर मार्ग-बिजनौर चांदपुर मार्ग पर भारी वाहनों का आवागमन सुबह से ही बंद है, जबकि छोटे वाहनों को सीएम योगी के आने से दो घंटे पहले रोक दिया गया। सिर्फ जनसभा में जाने वाले लोगों के वाहनों को ही निकलने की अनुमति दी गई। चांदपुर की तरफ जाने वाले वाहनों को अम्हेड़ा से निकाला गया और इसी मार्ग से वापसी हुई।

पुलिस फोर्स को दिए दिशा निर्देश-सुरक्षा व्यवस्था में तैनात रहने वाली पुलिस फोर्स को एसपी नीरज कुमार जादौन ने जनसभा स्थल पर ही शुक्रवार की शाम ब्रीफ किया था। जिन्हें ड्यूटी के संबंध में जरूरी दिशा निर्देश दिए। बताया गया कि बाहरी जिलों से भी ड्यूटी के लिए पुलिस फोर्स पहुंची है। इसके साथ ही यातायात को लेकर भी दिशा निर्देश दिए गए।

सर्किल जेल शिवपुरी में विधिक साक्षरता शिविर संपन्न

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

शिवपुरी, राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर आदेशानुसार गतदिवस को सर्किल जेल शिवपुरी में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश दीपक गुप्ता की अध्यक्षता में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधान जिला न्यायाधीश ने जेल का निरीक्षण किया प्रत्येक बैरिक में जाकर बंदियों के स्वास्थ्य, भोजन, मनोरंजन, पेयजल एवं विधिक सहायता, अपील, जमानत, पेशी आदि विषयों पर पूछताछ की। तत्पश्चात विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।इस दौरान प्रधान जिला न्यायाधीश ने बताया कि भले ही बंदी जेल में हो लेकिन उनके मौलिक अधिकार एवं कानूनी अधिकार समाप्त नहीं होते, साथ ही निशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करना एवं अपने केश के संबंध में अद्यतन जानकारी प्राप्त करना प्रत्येक बंदी का हक है। जेल में रहने के दौरान बंदी आत्मचिंतन एवं आत्म अवलोकन कर विधिक सेवा प्राधिकरण और जेल प्रशासन के सहयोग से दिये जाने वाले प्रशिक्षण जैसे जैकिट की सिलाई या कारपेंट्री का काम अथवा धार्मिक या अन्य पुस्तिकों के अध्ययन के माध्यम से अपने भविष्य का मार्ग निर्धारित कर सकते है। कार्यक्रम उपरांत जेल परिसर में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वारा फलदार पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक रमेशचन्द्र आर्य, जिला विधिक सहायता अधिकारी डॉ.वीरेन्द्र कुमार चढार, जेलर दिलीप सिंह आदि उपस्थित रहे।

एडीआर सेंटर शिवपुरी में रक्तदान शिविर सम्पन्न

108 यूनिट रक्त का हुआ कलेक्शन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी– राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के आदेशानुसार एवं प्रधान जिला न्यायाधीश दीपक गुप्ता के निर्देशन में एवं जिला न्यायाधीश एवं जिला प्राधिकरण की सचिव अर्चना सिंह के मार्गदर्शन में गतदिवस एडीआर सेंटर, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय शिवपुरी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।
शिविर में जिला न्यायालय से जितेन्द्र मेहर, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, दिव्यानी सिंह, ट्रेनी जज, अध्यक्ष जिला अभिभाषक संघ शिवपुरी शैलेन्द्र समाधिया, सीआरपीएफ के सीओ प्रवीण थपालियाल, एडीशनल सीओ अवनीश, वन विभाग के डीएफओ सुधांशु यादव, एसडीओ मनोज सिंह, जन अभियान परिषद के ब्लॉक कॉर्डिनेटर शिशुपाल सिंह जादौन, नगर पालिका सी.एम.ओ. डॉ.एस.के.सगर, गुरूद्वारा प्रबंधन समिति की ओर से हीरा सिंह आदि, मंजोत सिंह, अरविंदर सिंह, गुरूप्रीत सिंह, कर्मवीर सिंह, पक्कड़ सिंह, सौम्या चौहान, आईटीबीपी, के कमांडेंट कालूराम मीणा, डॉ.शैलेन्द्र गुप्ता, सदस्य जिला प्राधिकरण, मंजू गुप्ता, रोटरी क्लब एवं अन्य सामाजिक संगठनों के समन्वय से आयोजित किया गया। इस दौरान 108 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।शिविर में अधिवक्ता अंकुर चतुर्वेदी, दीपेश दुबे, अंकित वर्मा, आयुषी राणा, दीपक भार्गव, मदन रजक, शैलेंद्र सिंह तोमर, संजय शर्मा एवं अन्य जागरूक जन ने रक्तदान किया।

कायस्थ समाज शिवपुरी की महिलाओ द्वारा जिला अस्पताल मैं मरीजो ओर अटेंडरों को किये फल वितरण

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी– शिवपुरी जिला अस्पताल मैं आज कायस्थ समाज शिवपुरी की महिलाओं ने जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों और उनके अटेंडरों को फल वितरण किए इस पर कायस्थ समाज की जिला अध्यक्ष श्रीमती संध्या श्रीवास्तव एवं कार्यकारिणी के सभी महिला सदस्यों के द्वारा जिला चिकित्सालय शिवपुरी मैं मरीजों एवं अटेंडरों के लिए फल केला फरूटी स्नेकर एवं बिस्किट वितरण किए गए महिला अध्यक्ष श्रीमती संध्या श्रीवास्तव द्वारा प्रसूता वार्ड मैं जितनी भी लड़कियां हुई हैं उन्हीं सभी को 20,20 रुपए दिए गएसहयोगी सदस्यों की सूची इस प्रकार हैश्रीमती सुभाष श्रीवास्तव रितु श्रीवास्तव श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव श्रीमती दीपा श्रीवास्तव श्रीमती प्रमिता अस्थाना श्रीमती सुमन श्रीवास्तव श्रीमती ममता श्रीवास्तव श्रीमती राखी श्रीवास्तव श्रीमती दिव्या श्रीवास्तव श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव श्रीमती अनीता श्रीवास्तव

संविदा कर्मियों की सेवा शर्तों के संबंध में दिशा निर्देश जारी

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी– मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की घोषणा पर अमल करते हुए सामान्य प्रशासन विभाग ने आज विभिन्न विभागों में संविदा पर नियुक्त अधिकारियों/ कर्मचारियों की सेवा शर्तों के संबंध में दिशा निर्देश जारी किए हैं। साथ ही विभागों से कहा गया है कि इन दिशा निर्देशों के अनुरूप अपने प्रशासकीय सेटअप तथा भर्ती नियमों में आवश्यक परिवर्तन कर नियमों का पालन किए जाना सुनिश्चित किया जाए।आज जारी निर्देशों में कहा गया है कि मध्य प्रदेश शासन के विभागों के अंतर्गत आने वाले निगम, मंडल, सार्वजनिक उपक्रम, स्थानीय निकाय, विश्वविद्यालय, आयोग, विकास प्राधिकरण, बोर्ड, परिषद, संस्थाएं इन दिशा निर्देशों को अपने संविदा कर्मियों के लिए लागू करने के संबंध में अपने स्तर पर समुचित निर्णय लेने के लिए सक्षम होंगे।दिशा निर्देश में संविदा अधिकारियों कर्मचारियों को नियमित पदों पर नियुक्ति के अवसर, उनकी सेवा काल में मृत्यु होने पर अनुकंपा नियुक्ति, संविदा पदों की नियमित पदों से समकक्षता का निर्धारण, उनके पारिश्रमिक का पुनर्निर्धारण एवं वार्षिक वृद्धि, अवकाश स्वीकृति, उनके साथ अनुबंध निष्पादन, उनके आश्रितों को उपादान भुगतान, उन्हें राष्ट्रीय पेंशन योजना का लाभ, उनका सेवा मूल्यांकन एवं उनके विरुद्ध कार्यवाहियों से संबंधित प्रावधान, उन्हें स्वास्थ्य बीमा लाभ तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्देशों को सम्मिलित किया गया है।

पोहरी में पांच दिवसीय एफएलएन प्रशिक्षण का हुआ समापन,रोचक तरीके से पढ़ाने के विभिन्न तरीके समझाए

पोहरी। पोहरी में जनपद शिक्षा केंद्र पोहरी पर कक्षा 3 पढाने वाले शिक्षकों के लिए चल रहे पांच दिवसीय एफएलएन प्रशिक्षण के तीसरे चरण का समापन हुआ। प्रशिक्षण प्रभारी बीएसी भरत सिंह धाकड़ के मार्गदर्शन में कुशल मास्टर ट्रेनर्स अरविंद भार्गव, मिठ्ठू लाल साहू, प्रदीप धाकड़, लवकुश यादव, राजेन्द्र धाकड़, चंद्र मोहन दीक्षित, श्री राम प्रजापति एवं साहब सिंह गोलिया द्वारा कक्षा 3 पढाने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्रभारी बीएसी भरत सिंह धाकड़ ने बताया कि ब्लॉक स्तरीय एफएलएन प्रशिक्षण तीन चरणों में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रत्येक चरण में 80 -80 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य तय किया गया था। तीनों चरणों में कक्षा 3 पढाने वाले 237 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।समय समय पर जिला शिक्षा केन्द्र शिवपुरी एवं डाइट शिवपुरी से वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र का अवलोकन किया और शिक्षकों को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने हेतु मार्गदर्शन दिया। विकासखंड शिक्षा अधिकारी मोतीलाल खंगार, बीआरसी शिवचरण लाल जाटव, बीएसी भरत सिंह धाकड़, मांगी लाल वर्मा, शिवदयाल शर्मा, भंवर सिंह धाकड़ द्वारा भी शिक्षकों को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने हेतु सुझाव दिये। प्रत्येक चरण के अंतिम दिवस में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र एवं बेहतर कार्य करने की शुभकामनाएं देकर जनपद शिक्षा केंद्र पोहरी से विद्यालय की ओर कार्य मुक्त किया गया।

शंकरपुर बरेठ सर्वपंच के आथित्य मे वृक्षारोपण किया

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

शिवपुरी ।
सांकरे वाले ठाकुर बाबा देवास्थान
शंकरपुर बरेठ पर सर्पपंच के अथिथ्य में वृक्षारोपण किया गया
इस अवसर पर उपस्थित जन
सरपंच शंकरपुर बारेठ, हरिराम राठौर, राजाराम राठौर, बाबूलाल राठौर, मंगलियाराम राठौर पोरवाले, कपिल राठौर, हरिओम राठौर, मयंक राठौर, लखन राठौर,

लिटिया-सरपंच सहित तत्कालीन-सचिवों की करतूत लगातार जारी 6,86,258-रुपए की वित्तीय-अनियमितता-धारा 40-के तहत कार्यवाही के आदेश।

करगीरोड-कोटा।पूरे बिलासपुर जिले में कोटा-जनपद-पंचायत के अंतर्गत आने वाला लिटिया एकमात्र ग्राम-पंचायत होगा जहा पर लाखों रुपए के भ्रष्टाचार-वित्तीय-अनियमितता मामले में पंचायत के सरपंच को लगातार 02-बार छत्तीसगढ पंचायती-राज अधिनियम 1993 की धारा 40 के तहत कार्यवाही करने का आदेश उपसंचालक-जिला-पंचायत बिलासपुर द्वारा किया गया है, इससे पूर्व 14,89,926/? के वित्तीय-अनियमितता मामले में जिला-पंचायत सीईओ द्वारा 03-अक्टूबर 2022 के अपने आदेश में लिटिया पंचायत के 02-सचिवो को निलबिंत करते हुए लिटिया-सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम के खिलाफ छत्तीसग-पंचायती-राज-राज अधिनियम-1993 की धारा 39/40 के तहत कार्यवाही-वसूली के लिए एसडीएम-कोटा को किया जा चुका था..20-जुलाई 2023 के अपने एक आदेश में उपसंचालक जिला पंचायत बिलासपुर द्वारा एक बार पुनः से लिटिया सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम तत्कालीन सचिव केशव यादव के विरुद्ध 217538- की वित्तीय-अनियमितता सहित लिटिया

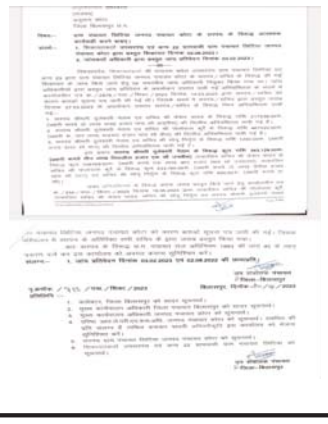

सरपंच तत्कालीन सचिव पोला दास कुर्रे 467520- की वित्तीय अनियमितता, लिटिया सरपंच तत्कालीन सचिव सोनू निर्गुण 1200- की वित्तीय अनियमितता पाई गई..कुल मिलाकर लिटिया सरपंच रही दुलेश्वरी नेताम के विरुद्ध 3,43,129- तत्कालीन सचिव केशव यादव के विरुद्ध 1,08,769-, तत्कालीन सचिव पोलादास कुर्रे के विरुद्ध 2,33,760.00 सचिव सोनू निर्गुण के विरुद्ध 600.00 वित्तीय0 अनियमितता पाई गई है, उक्त पूरे मामले में

उपसंचालक-जिला-पंचायत बिलासपुर के द्वारा तत्कालीन तीनो सचिव सहित लिटिया सरपंच को कारण बताओ सूचना जारी की गई थी..जिसके परिपालन में लिटिया सरपंच के अतिरिक्त सभी सचिवों द्वारा जवाब प्रस्तुत किया गया था जिसके बाद उपसंचालक बिलासपुर जिला पंचायत द्वारा छत्तीसगढ़ पंचायत राज अधिनियम 1993 की धारा 40 के तहत लिटिया सरपंच के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की अनुशंसा की गई है।
लाखों रुपए के वित्तीय-अनियमितता मामले में एसडीएम-कोटा ने लिटिया सरपंच को बर्खास्त किया था
लिटिया-सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम द्वारा लाखो रुपए के वित्तीय-अनियमितता मामले में लगभग 09-महीने की लंबी-अवधि के सुनवाई के बाद 21-जून 2023 को एसडीएम-कोटा हरिओम द्विवेदी द्वारा छत्तीसगढ़ पंचायती राज अधिनियम 1993 की धारा 40(1) (ख) के तहत लिटिया सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी नेताम को बर्खास्त करते हुए धारा 40 (2) के तहत अगले 06-वर्ष के लिए चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया गया था, 21-जून 2024 के अपने आदेश में एसडीएम-कोटा हरिओम द्विवेदी ने लिटिया सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम सहित तत्कालीन 02-सचिवों से वित्तीय-अनियमितता की राशि के वसूली किए जाने का आदेश पारित किया गया था।**अपर-कलेक्टर से मिला-स्थगन**---स्थगन के खिलाफ उपसरपंच ने बिलासपुर-अपर-कमिश्नर में की अपील एसडीएम-कोटा द्वारा अपने आदेश में धारा 40 के तहत बर्खास्तगी व अगले 06-वर्ष के लिए चुनाव लने के अयोग्यता के बाद लिटिया-ग्राम पंचायत में जनपद पंचायत कोटा सीईओ द्वारा करारोपण-अधिकारी के माध्यम से लिटिया के नवनिर्वाचित प्रभारी सरपंच का चुनाव भी संपन्न करा दिया गया था, जिसके कुछ समय बाद बाद बर्खास्तगी का दंश झेल रही लिटिया सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम द्वारा अधिवक्ता के माध्यम से एसडीएम कोटा के आदेश को चुनौती देते हुए बिलासपुर-एडिशनल-कलेक्टर के कोर्ट में स्थगन के लिए अपील दायर की गई, जिसके बाद एडिशनल-कलेक्टर बिलासपुर द्वारा मामले में सुनवाई करते हुए लिटिया सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी-नेताम को राहत देते हुए 07-अगस्त-2023 तक के लिए स्थगन आदेश जारी कर दिया गया

दिग्विजय सिंह 10 साल सीएम रहे, तब उन्हें बुधनी की याद नहीं आई, अब क्यों आ रहे हैं: मुख्यमंत्री

सीएम शिवराज सिंह चौहान ने चकल्दी को दी महाविद्यालय की सौगात, गोपालपुर को बनाया जाएगा तहसील,- बुधनी विधानसभा के चकल्दी एवं गोपालपुर में किया 133 करोड़ रूपए से अधिक के निर्माण एवं विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण

– चकल्दी गांव में घुसते ही गाड़ी से उतरे शिवराज सिंह और पैदल चलते हुए पहुंचे कार्यक्रम स्थल, गोपालपुर में भी किया रोड शो

रघुवर दयाल गोहिया

सीहोर/भैरूंदा। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जब दिग्विजय सिंह मध्यप्रदेश के 10 साल तक मुख्यमंत्री रहे, तब तो उन्हें एक बार भी बुधनी विधानसभा की याद नहीं आई। वे एक बार भी यहां नहीं आए और अब आकर सीधे-साधे, भोले-भाले आदिवासी भाई-बहनों को बहला-फुसला रहे हैं। कांग्रेस की सरकार में बुधनी विधानसभा की क्या स्थिति थी। गड्ढों में सड़कें थीं, बारिश में सड़कों पर पैदल चलना भी मुश्किल था। आदिवासियों को उनका अधिकार नहीं मिलता था, अत्याचार होता था। महिलाओं के साथ आए दिन घटनाएं होती थीं। तब उन्हें यहां की याद नहीं आई और अब उन्हें बुधनी की याद आ रही है। मुख्यमंत्री ने ये बातें अपने दौरे के एक दिन पहले चकल्दी के समीप आदिवासी गांव लावापानी आए दिग्विजय सिंह के उस बयान का पलटवार करते हुए कही, जिसमें दिग्गी राजा ने कहा था कि उनके दौरे से मुख्यमंत्री इतने डर गए हैं कि अगले दिन उनका कार्यक्रम चकल्दी में रख लिया गया। इससे पहले चकल्दी पहुंचे मुख्यमंत्री का हैलीपेड पर सांसद रमाकांत भार्गव सहित अन्य भाजपा नेताओं ने स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने चकल्दी में 81 करोड़ से अधिक के निर्माण एवं विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया साथ ही चकल्दी में महाविद्यालय खोलने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री ने गोपालपुर में भी 52 करोड़ रूपए से अधिक के निर्माण एवं विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण करते हुए गोपालपुर को तहसील बनाने की घोषणा भी की है। इस दौरान उनका रोड शो भी हुआ।

जनता का सुख-दुख मेरा सुख-दुख है–मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जनता का सुख-दुख मेरा सुख-दुख है। प्रदेश की जनता की खुशहाली के लिए मैं दिन-रात काम कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि विकास पर्व के तहत पूरे प्रदेश में विकास का महायज्ञ चलाया जा रहा है। इसके तहत अनेक निर्माण एवं विकास कार्यों का शिलान्यास तथा भूमिपूजन किया जा रहा है। सड़क, बिजली, पेयजल, सिंचाई के लिए पानी तथा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने चकल्दी में 81 करोड़ 44 लाख 4 हजार रूपए के अनेक निर्माण एवं विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने चकल्दी में महाविद्यालय खोलने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले सिंचाई की व्यवस्था नहीं होने के कारण उत्पादन कम होता था, लेकिन

अब अनेक सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से हर किसान के खेत तक पानी पहुंचाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चकल्दी में पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना का लोकार्पण किया गया है। इस सिंचाई योजना से पाटतलाई, अमीरगंज एवं पलासपानी जैसे पहाड़ी क्षेत्र के गांव के खेतों तक सिंचाई के लिए किसानों को पानी उपलब्ध होगा। पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना से तीनों गांवों के 661 किसानों की 889.07 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित होंगी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने अनेक योजनाओं के लाभान्वित हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किए।

अब बहनों को नहीं होगा पैसों का अभाव–मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले पैसों के अभाव में बहनों को बच्चों तथा घर की जरूरतों को पूरा करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, लेकिन मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना से अब महिलाएं अपनी सभी जरूरतों को पूरा कर पा रही हैं। इससे महिलाएं अपने साथ-साथ अपने बच्चों की और पारिवारिक जरूरतों को भी पूरा कर रही हैं। लाडली बहना योजना के तहत बहनों के खातों में एक हजार रुपए की राशि डाली जा रही है और इस राशि को 250 रूपए के मान से बड़ाकर 3000 रूपए तक किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अब बहन, बेटी एवं पत्नी के नाम मकान, दुकान या खेत खरीदने पर पंजीयन शुल्क एक प्रतिशत और स्वयं के नाम पर खरीदने पर तीन प्रतिशत लगेगा। उन्होंने कहा कि लाडली लक्ष्मी योजना के साथ ही पुलिस भर्ती में भी बेटियों को 30 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत बुजुर्गों को वायुयान से तीर्थ यात्रा कराई जा रही है।

चकल्दी में पैदल चले तो गोपालपुर में हुए रथ पर सवार–मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तय कार्यक्रम 12.25 से करीब एक घंटे की देरी से चकल्दी पहुंचे। हैलीपेड पर उतरने के बाद उनका काफिला कार्यक्रम स्थल की तरफ बड़ा, लेकिन वे गांव में घुसते ही गाड़ी से उतर गए और पैदल ही चले। इस दौरान घर-घर से उनका आत्मीय स्वागत-सम्मान किया गया। मुख्यमंत्री के साथ युवाओं में सेल्फी लेने की होड़ भी लगी रही। रास्तेभर युवा उनके साथ सेल्फी लेते रहे। हालांकि उनका पैदल चलने का कार्यक्रम तय नहीं था, लेकिन वे पैदल चलकर कार्यक्रम स्थल से थोड़ी देर पहले ही गाड़ी में सवार हुए। इधर गोपालपुर में उनका रोड शो करने का कार्यक्रम तय था। यहां पर मुख्यमंत्री ने रथ पर सवार होकर गोपालपुरवासियों से आशीर्वाद प्राप्त किया। रोड शो के दौरान हर घर से उनके उपर फूलों की वर्षा की गई तो वहीं रास्तेभर जय-जयकार भी होती रही। जगह-जगह उनका माला पहनाकर स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने भी सभी का आत्मीय भाव से अभिवादन भी किया।

चकल्दी में लगा हेल्थ कैंप, हुई जांचें–चकल्दी में आयोजित विकास पर्व के तहत मैगा हेल्थ कैंप का आयोजन भी किया गया। इस दौरान यहां पर विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम तैनात रही। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी मुख्यमंत्री मेगा हेल्थ कैम्प का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने डॉक्टर्स से चर्चा की और मरीजों के हाल-चाल जाने। मुख्यमंत्री ने चिकित्सकों से चर्चा करते हुए कहा कि कैम्प में आने वाले मरीजों को चिकित्सीय परामर्श के उपरांत गंभीर बीमारी से पीड़ित मरीजों को अस्पतालों में भर्ती कर इलाज कराना सुनिश्चित करने के लिए कहा। हेल्थ कैम्प में अस्थि रोग, कैंसर रोग, हृदय रोग, मूत्र रोग, न्यूरोलॉजी, मेडिसिन विभाग, सर्जरी, स्त्री रोग, नेत्र रोग, शिशु रोग, चर्म रोग, मनोरोग, कान, नाक एवं गला, फिजियोथैरेपिस्ट शामिल हुए और मरीजों

को चिकित्सीय परामर्श प्रदान किया। मुख्यमंत्री मेगा हेल्थ कैम्प में कुल 4123 मरीजों, आयुष के 1490 मरीजों ने उपचार कराया। इस कैम्प में 3825 मरीजों को दवाओं का वितरण किया गया। कैम्प में 209 मरीजों की सोनोग्रॉफी, 20 मरीजों का एक्स-रे, 1425 मरीजों के आंखों की जांच, 832 गाइनिक, 127 दांतों के मरीजों, 20 न्यूरोलॉजी के मरीजों, 12 कार्डियालॉजी के मरीजों तथा 28 पुलमोनरी से संबंधित मरीजों का उपचार तथा चिकित्सीय परामर्श प्रदान किया गया। गाँधी मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद राय, खुशीलाल आयुर्वेद महाविद्यालय से डॉ. राजेंद्र मेश्राम, भैरूंदा सीबीएमओ डॉ. मनीष सारस्वत सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

चकल्दी में 81 करोड़, गोपालपुर में 52 करोड़ के कार्यों का हुआ भूमिपूजन एवं लोकार्पण–मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने चकल्दी में आयोजित कार्यक्रम में 81 करोड़ 44 लाख 4 हजार रूपए के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने चकल्दी में 10 करोड़ 97 लाख रूपए की लागत से पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना (रकबा 889 हेक्टेयर सिचाई क्षेत्र) का लोकार्पण किया। इसी तरह करोड़ों की लागत से बनने वाली कई सड़कों का भूमि पूजन भी किया।

मुख्यमंत्री ने गोपालपुर में एक करोड़ 69 लाख रूपए की लागत से बने नवीन उपकेन्द्र गोपालपुर का लोकार्पण किया। गोपालपुर में 48 लाख रूपए की लागत से शासकीय यूनानी औषधालय के नवीन भवन का निर्माण कार्य, 3 करोड़ 99 लाख रूपए की लागत से गोपालपुर से इटारसी मार्ग, 53 लाख 44 हजार रूपए की लागत से गोपालपुर चौक से बजरंग मंदिर मार्ग के निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया।

सिंचाई योजना से 661 किसान होंगे लाभान्वित–मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा चकल्दी में विकास पर्व के तहत आयोजित कार्यक्रम में पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना का लोकार्पण किया गया। जिले की कोलार वृहद परियोजना के अंतर्गत 10 करोड़ 97 लाख रूपए की लागत से बनकर तैयार हुई पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना का निर्माण कार्य वर्ष 2018 में प्रारंभ हुआ था। इस योजना से तीन गांवों पाटतलाई, अमीरगंज एवं पलासपानी के किसानों को सुगमता से सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध होगा। पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना से तीनो गांवों के 661 किसानों की 889.07 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित होंगी। इस योजना के अंतर्गत कोलार परियोजना की दाई मुख्य नहर की आरडी 10.840 किलोमीटर पर एक पम्प हाउस का निर्माण किया गया है। इस पम्प हाउस से पम्पों द्वारा पानी 80 मीटर लिफ्ट किया जाएगा।

इन्होंने किया मुख्यमंत्री का स्वागत–लगभग ढाई दर्जन पंचायत प्रतिनिधियों के अलावा, कृषि साख सहकारी समितियों, नर्स आर्सोसियेश, स्वच्छतागृही संगठन, मुस्लिम समाज सहित विभिन्न समाजों, सामाजिक संगठनों, सरपंच संघ, व्यापारी संघों, शिक्षक संघ, संविदा कर्मियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता संघ, रोजगार सहायक संघ, लाडली बहना सेना सहित विभिन्न संगठनों ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

नाबालिक से बलात्कार करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

पुष्पांजलि टुडे
थाना रामपुर बाघेलान
जिला सतना (म.प्र.)
राजेश कुमार तिवारी

रामपुर सतना घटना विवरण : फरियादिया (काल्पनिक नाम) उम्र 17 वर्ष की दिनांक 22.07.2023 को थाना आकर लिखित आवेदन पर आरोपी विनय पटेल पिता बद्री पटेल उम्र 20 वर्ष निवासी शाह थाना रामपुर बाघेलान के विरुद्ध बलत्कार करने की रिपोर्ट पर थाना रामपुर बाघेलान में अपराध क्रमांक 480 / 2023 धारा 376,506 भादवि 3/4 पास्को एक्ट पंजीबद्ध किया गया है । पुलिस अधीक्षक सतना श्री आशुतोष गुप्ता (भा.पू.से) के आदेशानुसार उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्रीमती ख्याति मिश्रा के निर्देशन में थाना प्रभारी थाना रामपुर बाघेलान श्री संदीप चतुर्वेदी द्वारा थाना स्तर पर आरोपी राजकुमार साकेत की तलाश के लिए विशेष टीम गठित की गई थी । आरोपी की तलास हेतु हर संभव प्रयास लगातार टीम द्वारा की जा रही थी दिनांक 23.07.2023 को विशेष सूत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर आरोपी विनय पटेल पिता बद्री पटेल उम्र 20 वर्ष निवासी शाह थाना रामपुर बाघेलान को घेराबंदी कर पकड़ लिया गया, जिसे गिरफ्तार कर विधिसंगत विवेचना कार्यवाही पूर्ण कर माननीय न्यायालय पेश किया गया जिसके आदेशानुसार आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में केन्द्रीय जेल सतना निरूद्ध किया गया है ।

गिरफ्तार आरोपी का नाम पता विनय पटेल पिता बद्री पटेल उम्र 20 वर्ष निवासी शाह थाना रामपुर बाघेलान जिला सतना (म.प्र.)

सम्पूर्ण कार्यवाही में उप निरीक्षक संदीप चतुर्वेदी थाना प्रभारी रामपुर बाघेलान, उप निरीक्षक ओशो गुप्ता चौकी प्रभारी बेला, उप निरी साधना कठेल, सउनि केशव पाण्डेय, प्रधान आरक्षक दिलीप सिंह, प्र आर शंकर दयाल मिश्रा, आरक्षक नंद कुमार त्रिपाठी, रामानुज दुबे, केपी सिंह, देवेन्द्र सिंह, विकाश चतुर्वेदी, म आर शुभांशी तिवारी आदि की सराहनीय भूमिका रही है ।

पंचायत पढ़ावली के सचिव इंद्रभान सिंह को दिया नलजल योजना को चालू करने निर्देश भी हवाई बन कर रह गया

मुरैना --- ग्राम पढ़ावली में पीने के पानी की किल्लत रूपी समस्या को लेकर आज दिनांक ग्राम पंचायत से लेकर बल्लभ भवन मंत्रालय तक अधिकारियों व मंत्रियों को भी अवगत कराया गया है लेकिन सभी पीने के पानी की समस्या पर मौन धारण किए हुए हैं जहां पर आज दिनांक तक पीने के पानी की किल्लत लगभग तीन वर्षों से समाचार पत्रों की सुर्खियां बनी हुई है लेकिन क्षेत्रीय विधायक सहित मंत्रियों अधिकारियों ने आज दिनांक तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया है इस प्रकार जनता का मनोबल चुनावी माहौल में गिरता हुआ नजर आ रहा है जहां पर जनता में चर्चा भी है कि पीने के पानी पर जिस प्रकार राजनेता व अधिकारी कर्मचारियों ने मौन धारण किया है इसलिए चुनाव का वहिष्कार भी करेंगे वहीं शायद मुरैना में पीएचई विभाग है भी या नहीं कोई सुनता ही नहीं है जब कि तत्कालीन ईई पीएचई संतोषी लाल बाथम के संज्ञान में मामला अच्छे ढंग से था वही मामला वर्तमान ईई पीएचई सहित ग्राम पंचायत के साथ साथ जनपद पंचायत व जिला पंचायत सीईओ के संज्ञान में भी है जिस पर 18 जुलाई 2023 को जनपद पंचायत मुरैना सीईओ ए. पी. प्रजापति द्वारा मीटिंग बुलाई जिसमें ग्राम पंचायत पढ़ावली के सचिव इंद्रभान सिंह गुर्जर को निर्देश दिया गया कि नलजल योजना को 3 दिवस के अंदर चालू कर मुझे अवगत कराया जाए लेकिन पांच, छः दिन बाद भी आज दिनांक तक जनपद पंचायत सीईओ द्वारा दिए गए निर्देशों को ठेंगा दिखाते हुए ग्राम पंचायत पढ़ावली के सचिव इंद्रभान सिंह गुर्जर द्वारा खारी पानी के नलजल योजना वाले पंप को चालू नहीं कराया गया है जो कई महीनों से बंद पड़ा ह

जंतर मंतर पर भीम आर्मी की रैली

नई दिल्ली। नई दिल्ली के जंतर मंतर पर भीम आर्मी के द्वारा 0रैली आयोजित की गई। इस रैली का उद्देश्य 28 जून को चंद्रशेखर आजाद पर हुए हमले का विरोध करना और घटना की जांच की मांग करना था। लोकसभा चुनाव से पहले भीम आर्मी की तरफ से शक्ति प्रदर्शन किया

गया है। देशभर के अलग-अलग राज्यों से भीम आर्मी संगठन से जुड़े कार्यकर्ता जंतर-मंतर पहुंचे और प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने चंद्रशेखर आजाद को केंद्र सरकार के द्वारा जेड प्लस सिक्योरिटी दिए जाने और मामले की सीबीआई जांच करने की मांग की। भीम आर्मी के लोगों ने बताया कि किस तरह से उप्र में भीम आर्मी चंद्रशेखर रावण की जान से मारने की कोशिश की गई। हमारी मांग है कि इस पूरे मामले की सीबीआई जांच होनी चाहिए। असली दोषी अभी भी बाहर घूम रहे हैं। यह तो सिर्फ मोहरा है, जो पकड़े गए। इसके अलावा चंद्रशेखर रावण को जेड प्लस सिक्योरिटी दी जाए। जब देश में बाबाओं को जेड प्लस सिक्योरिटी दी जा सकती है तो फिर भीम आर्मी प्रमुख को क्यों नहीं दी जा सकती है?

आरटीआई में खुलासा :नोएडा पुलिस की 58 स्कूटी गायब, पुलिस ने नहीं दिया जवाब

नई दिल्ली। नोएडा। गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट का हाल बेहाल हो गया है। यह हम नहीं कह रहे हैं एक आरटीआई ने यह खुलासा किया है। आरटीआई से जानकारी मांगी गई कि 2020 में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर शुरू की गई 'स्वयं सिद्धा' नाम की योजना में पहले चरण में 50 और उसके बाद फिर 50 स्कूटी का बेड़ा शामिल किया गया था, जिस पर महिला पुलिसकर्मी व्यस्त जगहों, मार्केट और अन्य जगहों पर गश्त लगाएंगी। इसमें सिर्फ 42 स्कूटी ही पुलिस के पास है।

दरअसल, आरटीआई एक्टिविस्ट रंजन तोमर ने गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट से स्कूटी और कितनी महिला पुलिसकर्मी गश्त लगाती हैं, इसकी जानकारी मांगी। इसका चौंकाने वाला जवाब मिला। समाजसेवी रंजन तोमर की आरटीआई से खुलासा हुआ है कि 100 में से सिर्फ 42 स्कूटी ही पुलिस के पास बची हैं। अगस्त 2020 में पुलिस कमिश्नरेट में तत्कालीन पुलिस कमिश्नर आलोक सिंह ने 'स्वयं सिद्धा' योजना का शुभारम्भ किया था। जिसमें 50 स्कूटियों पर महिला पुलिस को रवाना किया गया था। कुल 100 ऐसी स्कूटी पूरे शहर में महिला सुरक्षा के लिए लगाई गई थी। रंजन तोमर ने एक आरटीआई गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट में लगाई। जिसके जवाब से कई सवाल खड़े हो गए हैं। कुल 100 स्कूटियों में से 58 स्कूटी का कोई अता-पता नहीं है। जबकि, 42 स्कूटी स्वयं सिद्धा योजना के तहत शहर में चल रही हैं। अन्य स्कूटी की जानकारी पुलिस ने नहीं दी है। ना ही कोई स्कूटी बढ़ाई गई है। आरटीआई एक्टिविस्ट रंजन तोमर का कहना है कि सिर्फ तीन सालों में 58 स्कूटी कहां चली गई, इसकी जांच करनी चाहिए। क्या महिलाओं के प्रति अपराधों में इतनी कमी आ गई है कि 58 स्कूटियों की अब ज़रूरत ही नहीं है।

10 रुपये ज्यादा किराए को लेकर हुआ विवाद महिला यात्री को बस से दिया धक्का, हो गई मौत

ग्वालियर । ग्वालियर से मुरैना जा रही बस में सवार महिला और उसके पति का कंडक्टर से किराए को लेकर विवाद हो गया। महिला और उसके पति ने बस रोककर उतरने की बात कही, इस पर कंडक्टर ने बस रुकवाई। महिला उतरपाती इससे पहले ही ड्राइवर ने बस आगे बढ़ा दी और कंडक्टर ने चलती बस से उसे धक्का दे दिया। महिला का सिर बस के टायर के नीचे आ गया और कुचल गया। महिला की मौके पर ही मौत हो गई।

ड्राइवर और कंडक्टर के खिलाफ एफआइआर-कंडक्टर और ड्राइवर बस लेकर भाग गए। इस घटना से गुस्साए स्वजन ने पुरानी छावनी इलाके में चक्काजाम कर दिया। पुरानी छावनी पुलिस ने बस चालक और कंडक्टर पर एफआइआर दर्ज कर ली है। सीएसपी महाराजपुरा रवि भदौरिया ने बताया कि मुरैना के जौरा निवासी विजय शाक्य अपनी पत्नी मिथलेश के साथ मुरैना जा रहे थे। उनके साथ उनका दोस्त सुरेंद्र, सुरेंद्र

की पत्नी भूरी देवी, वीरवल, वीरवल की पत्नी माया व उसके बच्चे थे।ग्वालियर की पुलिस लाइन के मंदिर में चोरी, बदनामी से बचने नहीं कराई एफआइआर ग्वालियर की पुलिस लाइन के मंदिर में चोरी, बदनामी से बचने नहीं कराई बस **रोकने के लिए कहा था**-बहोड़ापुर स्थित मानसिक आरोग्यशाला के पास से यह लोग बस एमपी06 पी 0407 में सवार हुए। बस पुरानी छावनी की ओर से मुरैना जा रही थी। इसी दौरान कंडक्टर ने 60 रुपये किराया मांगा। विजय और उसकी पत्नी व अन्य लोग बोले- मुरैना तक के 50 रुपये लगते हैं। इसी पर विवाद हुआ। विजय व मिथलेश ने बस रोकने को कहा। **बस के पहिये में आ गया महिला का सिर**-इन लोगों ने कहा- यह लोग बस से उतर जाएंगे। कंडक्टर ने बस रुकवाई। सभी लोग उतर गए, लेकिन सामान अधिक होने की वजह से मिथलेश नहीं उतर सकी। इसी दौरान ड्राइवर ने बस चला दी और कंडक्टर ने मिथलेश को धक्का दे दिया। महिला का सिर बस के पहिये के नीचे आ गया और उसकी मौत हो गई

पेड़ काटते वन विभाग की टीम ने पकड़ा, चौकी में घुसकर आरोपित को छुड़ा ले गए गांववाले

ग्वालियर । वन माफिया का खौफ जंगल में बढ़ता जा रहा है। वन माफिया ने एक दुस्साहसिक घटना को अंजाम देकर एक बार फिर जंगल की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। वन विभाग की टीम ने माफिया को पकड़ा था। ये लोग पेड़ काटकर ले जा रहा था। जब इसे पकड़कर वन विभाग की चौकी पर लेकर पहुंचे तो यहां इनके अन्य साथी व स्वजन आ गए। उन्होंने वन विभाग की चौकी को घेरा, वन रक्षकों के साथ झूमाझटकी की और आरोपित को छुड़ा ले गए। यह घटना आरोन क्षेत्र की है। आरोन थाना पुलिस ने एफआइआर दर्ज कर ली है। एक आरोपित को पकड़ भी लिया है। वन विभाग पर हमले का यह पहला मामला नहीं है।आरोन थाना प्रभारी अभिनव शर्मा ने बताया कि सतीश सविता आरोन वन क्षेत्र की करही चौकी पर तैनात है। वह अपने साथी वन रक्षक लोकमन और राजीव सिंह के साथ गश्त पर निकला था। इसी दौरान जंगल से पेड़ काटकर ले जा रहे लोगों को घेर लिया। यहां वीरू सिंह को पकड़ लिया। उसे लेकर चौकी पहुंचे। कुछ ही देर में वीरू के अन्य साथी और स्वजन आ गए। इन लोगों ने वन विभाग के अमले पर ही हमला कर दिया और आरोपित को छुड़ा ले गए। इसके बाद वन विभाग की टीम ने पुलिस को सूचना दी। आरोन थाने में एफआइआर दर्ज करवाई। थाना प्रभारी शर्मा ने बताया कि एक आरोपित पकड़ा गया है।इधर...गिरवाई में अतिक्रमण हटाने **पहुंचा निगम अमला, पथराव किया तो भागा**-गिरवाई थाना क्षेत्र के अंतर्गत अजयपुर में भी नगर निगम के अमले पर पथराव हो गया। निगम अमला सरकारी जमीन पर अतिक्रमण हटाने के लिए पहुंचा था। यहां रहने वाले दुर्गा प्रसाद कुशवाह ने रास्ते की जमीन ही घेर रखी है। यहां से अतिक्रमण हटाने के लिए जब अमला पहुंचा तो दुर्गा प्रसाद कुशवाह ने हमला कर दिया। अतिक्रमण को लेकर पड़ोस में रहने वाले बद्रीप्रसाद कुशवाह ने कई बार शिकायत की है। जब दुर्गाप्रसाद ने पथराव किया तो बद्रीप्रसाद की ओर से भी पथराव हुआ। इस मामले में गिरवाई थाना पुलिस ने दुर्गाप्रसाद पर एफआइआर दर्ज कर ली है।

पुणे में गिरफ्तार आतंकियों को रतलाम लाकर पूछताछ कर सकती है मोटरसाइकिल चोरी करते पकड़े गए आतंकी

इनके नाम इमरान खान (23) और मो. यूनुस साकी (24) हैं। वे पुणे के कोथरुड क्षेत्र में मोटरसाइकिल चोरी करते हुए पकड़े गए थे, जबकि इनका एक साथी मोहम्मद शाहनवाज आलम (31) फरार हो गया था। वह हजारीबाग झारखंड का रहने वाला है।

मप्र में ठिकानों का पता लगाने के लिए होगी पूछताछ-गिरफ्तार दोनों आरोपितों का संबंध आतंकी संगठन आइएसआइएस के उप संगठन सुफा से है। मप्र में इनके ठिकानों और गतिविधियों का पता लगाने के लिए इनसे पूछताछ की जाएगी। साक्ष्य एकत्र करने के उद्देश्य से इन्हें रतलाम लाने की तैयारी है। पुणे पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार करने के बाद मामला महाराष्ट्र एटीएस को सौंप दिया है।

जयपुर दहलाने की साजिश में फरार रतलाम के इमरान और युनूस पुणे में गिरफ्तार

जयपुर दहलाने की साजिश में फरार रतलाम के इमरान और युनूस पुणे में गिरफ्तार

चार लोगों को किया था गिरफ्तार-पिछले वर्ष 30 मार्च को राजस्थान सीमा पर स्थित रतलाम (मप्र) के निंबाखेड़ा थाने में कट्टरपंथी सुफा संगठन से जुड़े चार लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध प्रकरण दर्ज किया गया था। इनके पास से विस्फोटक बरामद किया गया था।जयपुर में ब्लास्ट की तैयारी में थेवे विस्फोटक राजस्थान ले जाकर जयपुर में ब्लास्ट करने की तैयारी में थे। बाद में यह मामला एनआइए ने ले लिया था। एनआइए ने इन पर पांच-पांच लाख रुपये का इनाम घोषित किया था। लगभग 16 माह पहले प्रदेश में सुफा के कुछ सदस्यों के पकड़े जाने के बाद ये दोनों मुंबई चले गए थे। यहां लगभग तीन दिन रहने के बाद पुणे जाकर रहने लगे थे।पेशे से ग्राफिक डिजाइनरइमरान और यूनुस पेशे से ग्राफिक डिजाइनर बताए जाते हैं। पुणे में दोनों के पास से फर्जी आधार कार्ड, ड्रोन कवर, कारतूस, इलेक्ट्रानिक वजन कांटा आदि बरामद किया गया है। शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि दोनों बम बनाने में माहिर हैं। आशंका जताई जा रही है कि15 अगस्त के आसपास पुणे में मोटरसाइकिल से बम ब्लास्ट कर सकते थे।मप्र के संदर्भ में इन बिंदुओं पर पूछताछ करेगी एटीएस और एनआइए प्रदेश में इनका नेटवर्क, प्रशिक्षण, टेरर फंडिंग, विदेश में आतंकियों के संबंध, रतलाम में उनकी गतिविधियां, कब और कैसे सुफा से जुड़े। अन्य लोगों को जोड़ने के लिए क्या करते थे। विस्फोटक और हथियार कहां से प्राप्त कर रहे थे। प्रदेश में जबलपुर, भोपाल, छिंदवाड़ा आदि जगह से गिरफ्तार हिज्ब-उत-तहरीर (एचयूटी),जेएमबी और आइएसआइएस आतंकियों से संबंधों की पड़ताल।

इस दौरान कार्यशाला में सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता एवं समाज सेवी राजेन्द्र वर्मा ने प्रस्ताव को विधिक जानकारी के अनुसार तैयार कराने में योगदान

नगर निगमों में अच्छे विकास तथा 74 वें संशोधन के अनुसार नियमों की जानकारी का प्रचार प्रसार कर जागरूकता लाने के उद्देश्य से संविधान के 74 वें संशोधन के सम्बन्ध में इंडो ग्लोबल सोशल सर्विस सोसाइटी गोरखपुर द्वारा क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान लखनऊ में ‘नगर स्वराज’ विषय पर आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का संकल्प के साथ समापन हुआ। और गीता शर्मा ने नगर निगम के विकास में वार्ड समितियों के योगदान पर विस्तृत जानकारी दी।कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए नेहरू युवा केन्द्र संगठन के पूर्व निदेशक और तीसरी सरकार अभियान के संस्थापक डा0 चन्द्र शेखर ‘प्रयाग’ ने कार्यशाला में उपस्थित सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों से अलग अलग विचार आमंत्रित कर उनकी समीक्षात्मक व्याख्या की और कार्यशाला के संयोजक एवं आयोजक रिंकी सिंह, पवन कुमार व लक्ष्मी इंडो ग्लोबल सोशल सर्विस सोसाइटी गोरखपुर ने नगर निगम में वार्ड कमैटी के गठन एवं विकास के सम्बन्ध में राज्य सरकार को देने के लिए सभी की सहमति से प्रस्ताव तैयार किया गया। जिसमें, दिनांक 25 नवंबर 2014 को प्रेषित शासनादेश सं0-

3/402- वि/215-सआ0/2014 का क्रियान्वयन कराने हेतु जागरूकता के लिए पोस्ट कार्ड अभियान, नगर निगम को ज्ञापन, हेंड बिल/ संदर्भ सामग्री का वितरण और सोशलमीडिया के माध्यम से प्रचार प्रसार कर वार्ड समितियों का गठन कराना सुनिश्चित किया गया।भविष्य में नगरपालिकाओं के सभासदों को भी जागरूक करने के लिए परिक्षेत्र स्तर पर कार्यशाला आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया इसके लिए राज्य स्तर पर एक समन्वय समिति का गठन किया गया जिसमें, सर्व सम्मति से रिंकी सिंह गोरखपुर, रामायण यादव लखनऊ, मुकन्द वल्लभ शर्मा मेरठ, राजेन्द्र वर्मा एडवोकेट (सुप्रीम कोर्ट) मथुरा, नाजिम अंसारी प्रयागराज, राकेश पाण्डेय कानपुर, अश्वनी राजोरिया फिरोजाबाद को शामिल किया गया।कार्यशाला में नेहरू युवा केन्द्र गाजियाबाद के सेवा निवृत्त एपीए मुकन्द वल्लभ शर्मा, जन आधार कल्याण समिति सचिव प्रवीन कुमार शर्मा, कोमल फाउंडेशन के अध्यक्ष अश्विनी राजौरिया, दिशा सेवा संस्था मेरठ के अध्यक्ष अमित मोहन, दिशा ग्रामोद्योग विकास संस्थान मेरठ से दमयन्ती गुप्ता, प्रयाग राज से आर्य शेखर, रामायण जी विज्ञान फाउंडेशन, लखनऊ से कोमल चौधरी एवं प्रदीप यादव सहारनपुर, नाजिम अंसारी बीओसी फैडरेशन प्रयागराज, नौटी साथी फाउंडेशन गाजियाबाद, बालमुनी कश्यप कासगंज, अरूण शर्मा आगरा, दृष्टि ज्ञान आगरा समिति से प्रशान्त कौशिक, करनजीत वर्मा, तन्मय भार्गव वाराणसी, शालिनी सिंह लखनऊ, अवधेश, कोमल गोरखपुर, राकेश चतुर्वेदी, रोहित, आदित्य व अन्य सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कट्टे से फायर कर हत्या के प्रयास का मुकदमा निकला झूठा..स्वयं फरियादिया व उसके भाई ने रची थी साजिश, 2 पड़ोसी युवकों ने किया था फायर

एक ने हाथ पकड़ा और दूसरे ने कट्टे से फायर किया...कट्टा बरामद कर गवाहियो को भेजा जेल

दिनाँक 13 जुलाई की रात्रि 10 बजे पुलिस के 100 नम्बर के माध्यम से सूचना दी गयी कि किसी ने उसकी बहन को गोली मार दी है। डायल 100 भोपाल से सूचना मिलने के बाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री राजेश चंदेल के द्वारा एसडीओपी व थाना प्रभारी को त्वरित कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देहात श्री जयराज कुबेर के मार्गदर्शन में एसडीओपी घाटीगाँव संतोष पटेल व थाना प्रभारी घाटीगाँव शैलेंद्र गुर्जर द्वारा साक्ष्य जुटाना शुरु किया गया। एसडीओपी द्वारा टेलीफोन पर कॉलर से बात की गई तो घायल का भाई रो रहा था और कुछ नहीं बताकर गंभीर घटना होने के संकेत दे रहा था। मौके पर 100 नम्बर गाड़ी व एम्बुलेंस आई तथा घायल पीड़िता को ग्वालियर अस्पताल लेकर गयी। घटना स्थल का भ्रमण करने गई पुलिस ने मौके से 1 खाली खोखा व 2 छतिग्रस्त बुलेट जप्त की तथा मौके पर चप्पलें सुरक्षित रखी मिलीं। थाना प्रभारी घाटीगाँव शैलेन्द्र घुरैया व उनि राहुल सेंधव अस्पताल पहुंचे जहाँ पीड़िता द्वारा

अपने पति विष्णु जाटव ललौट मुरैना व नंदोई रवि जाटव मुरैना के खिलाफ जीरो पर धारा 307 का मुकदमा दर्ज करवाया गया। थाने पर अपराध क्रमांक 107/23 धारा 307 भादवी कायम किया गया।

विवेचना के तथ्य- थाना प्रभारी शैलेन्द्र घुरैया द्वारा स्वयं विवेचना की गई और आरोपियों को सीडीआर निकलवाई गयी जिसमें घटना दिनाँक व आगे पीछे कई दिनों तक की लोकेशन मुरैना बता रही थी। पीड़िता सलोनी जाटव के द्वारा पूर्व में भी पति के खिलाफ 2 मुकदमे करवाये गए थे। पीड़िता चाहती थी कि उसका पति जेल जाए और समझौता के लिए पति से पैसों की मांग कर रही थी लेकिन जमानतीय धाराओं में अपराध होने के कारण पति जेल नहीं जा सका। पीड़िता व उसके भाई द्वारा साजिश रची गयी व पड़ोस के रहने वाले 2 साथियों के माध्यम से बाएं हाथ की बाजू में गोली मारी गयी जिसमे कोई गोली आरपार हुई थी लेकिन हड्डी में कोई चोट नहीं आयी थी। घटना संदेहास्पद होने से पुलिस ने पीड़िता के भाई की सीडीआर निकाली गई जिसमें उसके द्वारा घटना दिनाँक व समय पर पड़ोसियों को बार-बार काल किया गया और माँ को घटना के समय इलाज के लिए पड़ोस के प्राइवेट क्लिनिक में बैठा दिया गया। उतने ही समय में घटना को अंजाम दिया गया ताकि पति व नंदोई जेल जा सकें।

पड़ोसी अरोपी जिसने कट्टे से फायर किया था और जिसने पीड़िता का हाथ पकड़ा था दोनों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय भेजा गया जहाँ से दोनों को 31 जुलाई तक न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया है। कट्टे से फायर करने वाले अरोपी व सहआरोपियों के खिलाफ दुष्प्रेरण हेतु धारा 109, आपराधिक षड्यंत्र हेतु धारा 120बी, मिथ्या साक्ष्य गड़ने हेतु धारा 193 भादवी व 25/27 आर्म्स एक्ट की धाराओं के इजाफा किया गया है।

सराहनीय भूमिका- उनि शैलेन्द्र घुरैया थाना प्रभारी घटीगांव, उनि राहुल सेंधव, उनि अनवर शाह, आर.लोकेंद्र जाट, आर. लोकेश की सराहनीय भूमिका रही।भुवनेश कुमार ब्यूरो फिरोजाबाद से

अखिल भारतीय श्री दिगंबर वरैया परिचय सम्मेलन में 180 युवक - युवतियों के हुआ पंजीयन।

ग्वालियर। श्री दिगंबर जैन वरैया सामाजिक कल्याण समिति (रजि) दानाओली के तत्वाधान में अखिल भारतीय श्री दिगंबर वरैया युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आज रविवार को कम्पू स्थित महावीर भवन में भव्य शुभारंभ हुआ। परिचय सम्मेलन में युवा युवतियों ने अपना परिचय अपने परिवार के लोगों के साथ मंच पर पहुंचकर बड़े

सरलता के साथ दिया। जैन समाज के प्रवक्ता सचिन जैन ने बताया कि परिचय सम्मेलन का शुभारंभ प्रेमचन्द्र जैन मंच उघाटन फ्रित खुलकर किया। वही भगवान महावीर स्वामी के चित्र का आवरण हरीश जैन इंदौर, आचार्यश्री विराग सागर महाराज के चित्र का आवरण महावीर प्रसाद जैन शिवपुरी एवं दीप प्रज्वलित कोमलचंद्र जैन डबरा व सुरेश चंद राजेन्द्र जैन ने किया। मंगलाचरण तिरुपति रंग सृष्टि ग्रुप की बालिकाओं ने किया। अतिथियों का स्वागत उद्बोधन वरैया समिति के अध्यक्ष हीरालाल वरैया जैन एवं परिचय सम्मेलन की जानकारी वरैया समिति के महामंत्री मुकेश जैन ने प्रतुस्त किया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री मुकेश जैन संयोजक महेंद्र जैन व शैलेन्द्र जैन ने किया। दिगंबर जैन जगरण मंच ग्रेटर के युवा साथियों ने व्यवस्था संभाली। वही मुख्य वक्ता के रूप में सतीशचंद जैन व हरीश जैन इंदौर थे।वैवाहिक परिचय सम्मेलन होने से रिश्ते तय करने में होती है आसानी महापौरसम्मेलन की मुख्य अतिथि महापौर डॉ शोभा सिकरवार ने कहा कि वरैया जैन समाज के वैवाहिक परिचय सम्मेलन होने से समाज के लोगों को अपने बेटे बेटियों के रिश्ते करने में आसानी होती हैं। इस तरह के परिचय सम्मेलन आयोजित होना चाहिए जिससे समय तो बचता ही है और साथ ही सभी युवक-युवतियों को जानने और पहचानने का मौका भी इन परिचय सम्मेलन के माध्यम से मिल जाता है। मुख्य अतिथि डॉ शोभा सिकरवार एवम पार्षद धर्मेंद्र प्रेमलता जैन का सम्मान आयोजन के अध्यक्ष हीरालाल वरैया, महामंत्री मुकेश जैन, मुख्य संयोजक सुनील जैन संयोजक महेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जैन, रविन्द्र जैन, ने स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया।

पुष्पांजली टुडे
आम सूचना / कोर्ट नोटिस
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1120
10×4 cm 1400
12×4 cm 1680
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

पुष्पांजली टुडे
गुमशुदा / खोया -पाया
नाम परिवर्तन
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1050
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

उपलब्ध हैं।
फाइनेंस / लोन / होम लोन
ग्वालियर मुरैना बामोर गोहद मालनपुर डबरा इत्यादि जगह में आप मकान खरीदने ओर प्लॉट खरीद कर मकान बनाने के लिए लोन के हैं जरुरत तो करें हमसे संपर्क।
संपर्क करें
07974596469

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478